શ્રી યશોવિજયજી
જૈન ગ્રંથમાળા
દાદાસાહેબ, ભાવનગર.
ફોન : ૦૨૭૮-૨૪૨૫૩૨૨
૩૦૦૪૮૪૬

1385

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जैन विवाह विधि

और

वीरनिर्वाणोत्सव बही मुहूर्त

पद्धति

संपादक

नाथूलाल जैन (संहितासूरि, साहित्यरत्न,

शास्त्री, न्यायतीर्थ)

इन्दौर

प्रकाशक

श्री सेठ पन्नालालजी रतनलाल काला

मल्हारगंज, इन्दौर

की ओर से

भेंट

भाद्रपद शुक्ला ३ वीर नि. सं. २४७७

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विषय सूची

१ जैन विवाह विधि

२ श्री वीरनिर्वाणोत्सव नई बही मुहूर्त पद्धति

३ समाधिमरण (श्री सूरचन्दजी कृत)

४ बारह भावना (श्री मंगतरायजी कृत)

५ सामायिक विधिएवं सामायिक पाठ

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जैन विवाह विधि

और

वीरनिर्वाणोत्सव बही मुहूर्त पद्धति

संपादक

नाथूलाल जैन
(संहितासूरि, साहित्यरत्न, शास्त्री, न्यायतीर्थ)
इन्दौर

प्रकाशक

श्री सेठ धन्नालालजी रतनलाल काला
मल्हारगंज, इन्दौर.
की ओर से
भेंट

भाद्रपद शुक्ला ३, वीर नि. सं. २४७७

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भूमिका

जैन समाज में जैनशास्त्रों और समाज के अपने अपने प्रांतों एवं जातिप्रथा के अनुसार प्रकाशित कराई हुई जैन विवाह विधि की दस बारह पुस्तकें हमें देखने को मिलरहीं हैं। कुछ हस्त लिखितप्रतियों और स्व. पं. पन्नालालजी वाकलीवाल आदि की पूर्व पुस्तकों के आधार पर अन्य पुस्तकों के समान प्रस्तुत पुस्तक की रचना की गई है। इसमें सामायिक आवश्यकता के अनुसार विधि में संशोधन करते हुए धार्मिक जनों की श्रद्धा का ख्याल रख प्रचलित पूजाओं और श्लोकों को उद्धृत करके इस पुस्तक का संपादन कर दिया गया है।

श्री दि. जैन विद्वत्परिषद की ओर से भी एक जैन विवाह-विधि संपादन करने की सूचना मिली थी। जिसका आशय संभवत सब जातिओं और प्रांतों के रीति रिवाज का समावेश कर विस्तृत रूप से प्रकाशित कराने का हो। परंतु अकस्मात अवसर पाकर यह कार्य अपनी इच्छा से संक्षेप में ही करना उचित जानकर यह संकलन किया गया है।

आज से लगभग २६-२७ वर्ष पूर्व जबकि यहां इन्दैारमें और आस पास में जैनविवाह विधि प्रारंभ ही हुई थी, उन दिनों हम लोग भी यह विधि कराने जाया करते थे। उस समय शास्त्र के अनुसार ईंटों की

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आठ या ६ हाथ ऊंची और १ हाथ ऊंची वेदी (चबूतरा) बनवाकर उसपर १ हाथ लंबे चौड़े गहरे तीन कटनी वाले चौकोण तीर्थंकर कुन्ड की रचना कराई जाती थी तथा विवाह सामग्री याने साकल्प (हवन सामग्री) घृत समिधा आदि का परिमाण भी बहुत रहता था। विधि कराने में तीन चार घन्टे से कम नहीं लगते थे। उसपर भी भाग्यवश विवाहित स्त्री पुरुषों संबंधी कोई दुर्घटना के होने पर अपयश उठाना पड़ता था। उस दुर्घटना का दोष जैन विवाह विधि पर ही मंडा जाता था। धीरे धीरे प्रचार होते होते आज जो स्थिति है वह सबके सामने हैं। उत्तर प्रदेश में तो ब्राह्मण पांडे लोगोंतक को यह विधि कण्ठ है और इसीका वे उपयोग करते हैं। जैन विवाह विधि क़रीब १५) रु. या २०) रु. के व्यय में संपन्न हो जाय और गरीब व्यक्ति को भी यह न अखरे तथा घन्टे भर के भीतर ही इसका कार्य पूर्ण होजाय, ताकि ज्यादा समय तक बैठे रहने से कन्या के बेहोश हो जाने और लोगों की घबराहट एवं अरुचि की शिकायत न हो इन्हीं ख्यालों से हम लोगों ने काफी सुधार करने का प्रयत्न किया है, जो वेदी-कुन्ड की रचना और तोरण फेरे आदि के विषय में इस पुस्तक में दी गई सम्मति से भी ज्ञात हो सकेगा। इसमें अन्य जाति एवं प्रांत की खास खास प्रथा का भी उल्लेख कर दिया गया है। अन्य फेर-फाटा आदि प्रथायें हमने जानबूझ कर नहीं लिखी। हम ज्यादा प्रथाओं को महत्व भी नहीं देना चाहते। जितनी अंधपरंपरा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और अधिक व्ययके रीति रिवाज तथा परेशानियां कम होंगी उतनी ही समाज को राहत मिलेगी, यह हमारा विश्वास है। जैनविधि को श्वेतांबर समाज में भी प्रचलित कियाजाना चाहिए। वहां भी अब मांग बढ़ रही है।

दूसरी पुस्तक इसमें वीरनिर्वाणोत्सव और नई वहीमुहूर्त पद्धति की है। इसका प्रचार भी इन्दौर में और अन्यत्र मालवा आदि में नहींसा था। श्रीमान् जैनजातिभूषण लाला हजारीलालजी साहब इन्दौर ने १८ वर्ष पहले मुझसे लिखवा कर यह अपनी ओर से प्रकाशित करवाई थी और तब से इसका आपने प्रचार भी कराया। इसके बाद दो बार और यह छप चुकी है। आपने इस पद्धति का और विवाह विधि का प्रचार करने में हर प्रकार की सहायता दी है।

श्रीमान् प्र. दि पं. मुन्नालालजी काव्यतीर्थ इन्दौर को भी जैन विवाह की विधि का आद्य अंश दिखलाकर और आवश्यक प्रश्नों के संबन्ध में उनसे सम्मति प्राप्त हुई है तथा भाई जयकुमारजी टोंग्या इन्दौर ने भेंट स्वरूप पुस्तक प्रकाशन के लिए द्रव्य प्रदाता को एवं मुझे प्रेरित कर यह कार्य शीघ्र पूर्ण करा दिया इसके लिए उक्त सब महानुभावों का आभारी हूं।

संपादक
नाथूलाल शास्त्री, इन्दौर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

स्व. सेठ धन्नालालजी काला, इन्दौर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

स्व. सेठ धन्नालालजी काला का

परिचय

श्री पन्नालालजी काला हाटपीपल्या (मध्यभारत) के पुत्र श्री धन्नालालजी लगभग ६० वर्ष से इन्दौर में निवास करते रहे हैं। आपका जन्म वि. सं. १९३१ में हाटपीपल्या में हुआ था। आपने अपनी नवयुवक अवस्था से ही व्यापार में प्रवेश किया और उसमें कुशलता संपादनकर अपना गार्हस्थ्यजीवन सानंद चलाने लगे। अपनी सादगी, सरलस्वभाव और मिलनसारी आदि गुणों के कारण आपने अपने दि. जैन खंडेलवाल समाज में योग्य स्थान बना लिया। आपकी व्यवस्थित दिनचर्या और सात्विक भोजन पान करते रहने का परिणाम यह हुआ कि जीवन में आपको कोई खास रोग जनित पीडा का अनुभव नहीं करना पडा। आपने दि. जैन तीर्थक्षेत्रों की वन्दना भी सकुशल करली। आपके दो भ्राता श्री पूनमचन्दजी और श्री भूरामलजी काला वर्तमान में इन्दौर में ही निवास करते हैं। श्री धन्नालालजी ने करीब ७४ वर्ष की दीर्घ उम्र पाई और अपने उत्तराधिकारी योग्य पुत्र श्री रतनलालजी काला को सपरिवार छोडकर संसार की स्थिति के अनुसार वि. सं. २००४ की वैशाख शुक्ला ३ को आप शांतिपूर्वक स्वर्ग सिधारे।

श्री रतनलालजी काला मल्हारगंज इन्दौर ने अपने पूज्य पिताजी के प्रति कृतज्ञता प्रदर्शनार्थ उनकी स्मृति स्वरूप यह पुस्तक प्रकाशित कराई है, जो अभी श्री रतनलालजी कालाकी धर्मपत्नी सौ. रतनबाईजी के रोटतीज़ व्रत (भाद्रपद शुक्ला ३ के व्रतोद्यापन के शुभ अवसर पर अपने साधर्मी पाठकों की सेवा में सदुपयोग करने के हेतु भेंटकी जारही है।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

* जैन विवाह विधि *

मंगलाचरण

प्रावर्तयज्जनहितं खलु कर्मभूमौ ।
षट्कर्मणा गृहिवृषं परिवर्त्य युक्त्या ॥
निर्वाणमार्ग—मनवद्य—मजः स्वयम्भूः ।
श्रीनाभिसूनुजिनपो जयतात् स पूज्यः॥१॥
श्रीजैनसेन—वचना—न्यवगाह्य जैने ।
संघे विवाहविधि—रुत्तमरीतिभाजाम् ॥
उद्दिश्यते सकलमंत्रगणैः प्रवृत्तिं ।
सानातनीं जनकृतामपि संविभाव्य ॥२॥
अन्याङ्गना— परिहृते—निंज—दार वृत्ते-
र्धर्मो गृहस्थ—जनता—विहितोऽयमास्ते ॥
प्राच्यप्रवाह इति संतति पालनार्थ-
मेवं कृतौ मुनिवृषे विहितादरः स्यात्॥३॥

विवाह और उसका उद्देश्यः

शास्त्र की विधि के अनुसार योग्य उम्र के वर और कन्या का क्रमशः वाग्दान (सगाई) प्रदान, वरण, पाणिग्रहण होकर अन्त में सप्तपदी पूर्वक विवाह होता है। यह विवाह धर्म की परं-परा को चलाने के लिए, सदाचरण और कुल की उन्नति के लिए और मन एवं इंद्रियों के असंयम को रोककर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मर्यादा पूर्वक ऐन्द्रियिक सुख की इच्छा से किया जाता है। क्योंकि पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन अल्प शक्ति रखने वाले स्त्री पुरुषों से नहीं हो सकता इसलिये आचार्यों ने ब्रह्मचर्याणुव्रत में परस्त्री त्याग और स्वस्त्री संतोष का उपदेश दिया है। यह विवाह देव, गुरु, शास्त्र की साक्षी से समाज के समक्ष होता है, जो जीवन पर्यन्त रहता है। वर और कन्या में कन्या से साधारण तौर पर वर की उम्र कम से कम दो वर्ष और अधिक से अधिक दस वर्ष बड़ी होना चाहिये वर्तमान में कन्या की विवाह योग्य वय १४ वर्ष से और वर की १६ वर्ष से कम नहीं होना चाहिये।

विवाह में आजकल की परिस्थिति को देखते हुए धार्मिक क्रिया और आवश्यक सामाजिक नियमों के सिवाय अन्य रीति रिवाजों में खर्चा और बचत करने में ही हित है।

विवाह की सामग्री

श्रीफल, विनायक यन्त्र, शास्त्र, सिंहासन, चमर, छत्र,
२ १ १ १ ४ १

अष्टमंगल द्रव्य (ठौणा, चमर, छत्र, दर्पण, ध्वजा, झारी, कलश, पंखा) जलभरा सफेद लोटा,
१

लालचोल एक हाथ, अन्तर्पट के लिए दुपट्टा, फूलमाला
१ २

तीन कटनीवाली वेदी, पक्की नंबरी ईंटें, सूखी काली, मिट्टी
१ ८ ५।।।

कुंकुम, पिसीहल्दी, मेंहदी, लच्छा, नागरवेलपान, सुपारी

३ तोला ऽ- ४ तो. ऽ- २ ४

हल्दीगांठ, सरसों, दीपक, छोटे, रुई, माचिस, घी, चाटू

४ ऽ- ४ २ तो. १ ऽ१

लकडी का, लालचन्दन की व सफेदचन्दन की समिधा

१ ऽ। ऽ।

(लकडी) बड़-पीपल-आम-ढाक की सूखी समिधा, देशी

ऽ।

कपूर, पूजन द्रव्य [चांवल, गिरी (चटकें) केशर, बादाम, लौंग,]

१ तो. ऽ१॥ ऽ= ।) ऽ- २ तो.

पूजन उपकरण, हवनद्रव्य (बादामगुली, खोपरा, पिस्ता

ऽ- ऽ- २ तो.

लौंग, इलायची, खारक, शक्करकाबूरा) शुद्धदशांग

२ तो. १ तो. ऽ- ऽ-

धूप, थाली, कटोरी, शुद्धगादी या गलीचा, पाटे, चौकी

ऽ= ४ २ १ ४ २

आसन, चांदी की चुअन्नी, रुपयानगदी, कागजकीमाला

२ २ १) १

पंचरत्न पुड़ी।

१

नोट:—विनायक यन्त्र मंदिर से प्रतिष्ठित लाने और ले जाने में घर पर छुआछूत आदि से अविनय होता है अतः रकाबी में बना लेना चाहिये। अष्ट मंगल द्रव्य मंदिर से चाँदी पर खुदे हुए मिलते हैं। पक्की नम्बरी ईंटें, कच्ची अशुद्ध ईंटों से ठीक होती हैं और उनसे एक हाथ लम्बा चौड़ा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तथा ४ अंगुल ऊंचा शास्त्रानुसार स्थंडिल बनजाता है। उन्हें केवल रख देने और ऊपर से मिट्टी बिछा देने से काम चल जाता है और कारीगर की आवश्यकता नहीं रहती। चाटू १ हाथ लम्बा होता है। हवन द्रव्यों को इमानदस्ते में कुटाकर मिला लेना चाहिए।

विनायक यन्त्र का आकार

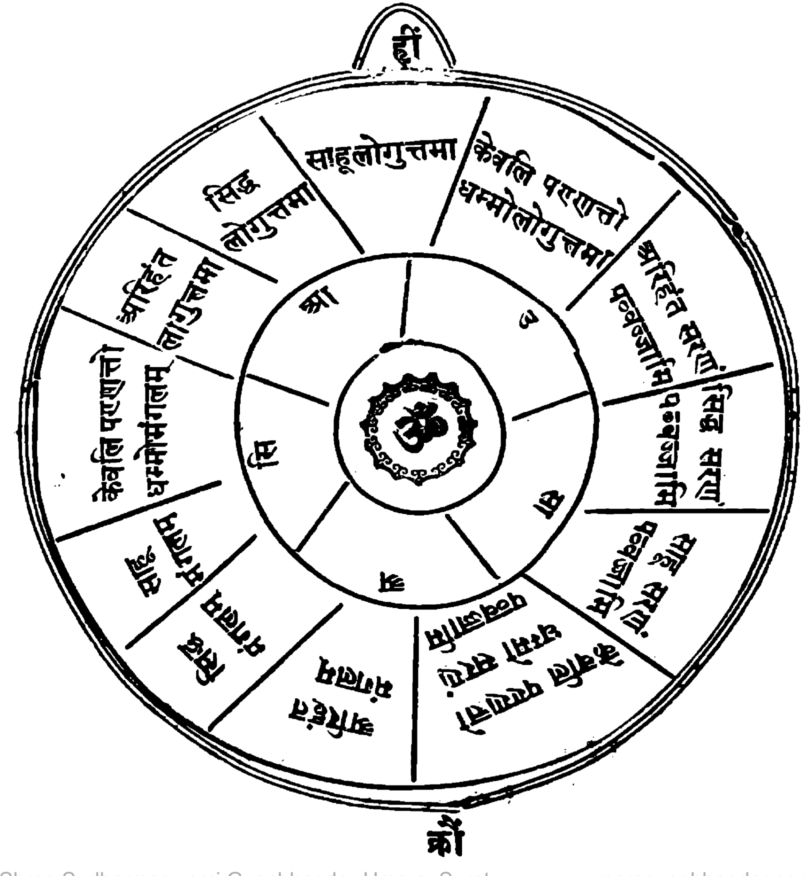

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वाग्दान

(सगाई) में पांचों के समक्ष वर पक्ष और कन्या पक्ष अपने वंशपत्र गोत्रादि का परिचय देकर संबन्ध निश्चित करते हैं जिसकी लिखा पढी गोठ के मंदिर में हो जाती है। पोरवाड़ आदि जातियों में इस समय विनायक यंत्र की पूजन भी की जाजी है। सगाई के समय वर पक्ष की ओर से जो सोना या अन्य रकम का गुप्त रूप से सौदा होने लगा है उसे बंद कर दोनों पक्ष के प्रेम को बढ़ाने का खयाल रखनेमें ही सबका हित है। बागड़ प्रांत में अभी भी कन्या विक्रय जारी है उसे भी बंद कर देना उचित है।

छोटा बाना (विनायक) बैठाना

विवाह के कम से कम पांच दिन पूर्व कन्या और वर अपने अपने यहां के श्री जिनमंदिर में जाकर शुभ मुहूर्त में पंच परमेष्ठी याने विनायक यंत्र की पूजा करें। वहां से घर आकर गृहस्थाचार्य से कंकण बन्धन करावें। कंकण बन्धन कन्या के बांये हाथ में और वर के दाहिने हाथ में किया जाय, विनायक पूजा आगे दी गई है। यदि विनायक यंत्र की प्रतिदिन पूजा कर सकते हों तो इसी दिन घर पर लाकर एकांत स्थान में विराजमान कर देना चाहिये और विवाह होने के समय तक रखना चाहिए।

कंकण बन्धन मंत्र।

जिनेन्द्रगुरु पूजनम् श्रुतवचः सदा धारणम्।
स्वशीलयमरक्षणं, ददत् सत्तपोवृंहणम्॥
इति प्रथितषट्क्रिया, निरतिचारमास्तां तव।
इति प्रथित कर्मणे विहित रक्षिकाबन्धनम्॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बडा बाना बैठाना

विवाह के कम से कम दो दिन पूर्व दूसरी बार मंदिर में जाकर वर और कन्या पुजन करें और घर जाकर पूर्ववत् कंकणबन्धन करावे।

मंडप निर्माण

विवाह के सात या पांच दिन पूर्व छोटा बाना के समय विवाह मण्डप के लिए मण्ड प की आवश्यका हो तो स्तंभारोपण विधि की जाती है। यह स्तंभ ज्योतिषी से पूछकर चार विदिशा में से किसी एक विदिशा में कन्या के यहां, कन्या के पिता या जो विवाह हाथ में लेता है उसके द्वारा और वर के यहां वर के पिता या- जो विवाह हाथ में ले उसके द्वारा और वर के यहां वर के पिता या जो विवाहहाथमें ले उसके हाथ से शुभमुहूर्त में होता है। कहीं २ स्तंभारोपण कन्या और वर के हाथ से भी करा लिया जाता है। जहां जैसा हो वहां वैसा करा लेवे। इसकी विधि में गृहस्थाचार्य स्तंभारोपण के लिए गड्ढा खुदाकर वर या कन्या के पिता माता आदि को जोडे सहित पूर्व या उत्तर की तरफ मुंह करके बैठाकर मंगलाष्टक, मंगल कलश, संकल्प, यन्त्र पूजा पूर्वक स्तंभ का आरोपण करावे। स्तंभ के ऊपर के हिस्से में लाल चोल में श्रीफल; सुपारी, हल्दी गांठ चांदी की चुअन्नी, सरसों, पान, आमके पत्ते, अमरवेल आदि लच्छे से बांध दे और गड्ढे के पास स्तम्भ खडाकर जल, दूध, दही, पारा, कुंकुम आदि क्षेपकर स्तंभ में स्वस्तिक कर गड्ढे में स्तंभका आरोपण करें। फिर शांतिपाठ एवं विसर्जन पाठ करें।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विवाह वेदी

घर के यहां केवल मण्डप की रचना होती है। और कन्या के यहां मराडप के सिवाय भांवर (फेरे) के लिए विवाह-वेदी की रचना भी होती हैं। मराडप में अथवा अन्यत्र जहां फेरे कराये जाते हैं। उस स्थान पर मंडवा (चांदेवा) ताना जाता है और कहीं २ मानस्तंभ व कलश (मिट्टी का) भी स्थापित किया जाता है। इस जगह वेदी की रचना की जाती है। वेदी बनाने के लिए कम से कम चार हाथ की लम्बी चौडी ज़मीन के आस पास चारों कोनों में कुम्हार के यहां से लाए हुए ७-७ बर्तन रखे जायें और उनके चारों ओर चार चार बांस तथा ऊपर भी कुल चार बांस लगाकर उन्हें नीचे लाल चोल से और ऊपर लाल पगडी से लपेटकर मून्ज की रस्सी और लच्छेसे बाँध देना चाहिए। बीच में ऊंचा चंदेवा बाँधना चाहिए जिसके नीचे वर कन्या खडे रह सकें। इस वेदी के बिलकुल बीच में एक हाथ लम्बा चौडा स्थंडिल, जो विवाह सामग्री के भीतर बताया गया है, बनाया जाय। इसीपर हवन होगा। इस स्थंडिल के पश्चिम या दक्षिण ओर आधा हाथ छोड़कर एक हाथ की जगह में तीन कटनी वाली चौकी या उस हिसाब से एक हाथ लम्बाई से ईटें रख देना चाहिए।

फेरे या पाणिग्रहण संस्कार विधि

कन्या के यहां वर बरात लेकर जाता है यह बरात बाहर गांव की हो तो सारी विवाह संबन्धी कार्यवाही दो दिन के भीतर ही हो जाना चाहिये। वर्तमान परिस्थिति को देखते हुये हमारी सम्मति में एक दिन में तोरन और फेरे होकर दूसरे दिन बरात बिदा कर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

देना चाहिए। तोरन में भी बरात का स्वागत होकर तिलक आरती हो जाय इसके पश्चात ही पाणिग्रहण संस्कार हो जाना चाहिए। तोरण का अभिप्राय है कन्या के द्वार पर आना। उत्तर प्रदेश में पहले से और मध्य भारत में अभी यह होने भी लगा हैं। अग्रवाल जाति में बरात के आनेपर बरात में यन्त्र पूजा होती है इसके बाद बरात कन्याके यहाँ जाती है।

फेरे के आधा घंटे पहले गृहस्थाचार्य विवाह की सामग्री देखकर उसे वेदी के स्थान पर यथा स्थान जमादे। पुजारी से पूजन द्रव्य धुलवाकर मंगा लिया जाय। स्थंडिल पर कुंकुम से साथिया बना ले और चारों ओर दीपक रखदे। पूर्व या उत्तर मुख बनी हुई तीन कटनी में ऊपर यन्त्रजी, बीच में शास्त्र और नीचे गुरुपूजा के निमित्त चौसठ ऋद्धि कागज पर मांडकर रखे तथा वहीं अष्ट मंगल द्रव्य सजावे। वर कन्या के बैठने के लिए यंत्र के दक्षिण ओर नई गादी बिछवा दे, जिस पर वे उत्तर मुख बैठ सकें।

विवाह का मुहूर्त

विवाह में अग्रवालों में कन्या प्रदान और पाणिपीडन (हथलेवा) का मुहूर्त मुख्य माना जाता है। ब्राह्मण ज्योतिषी इन्हीं मुहूर्तों को निकाला करते है। परन्तु जैन विधि के अनुसार खण्डेलवालों में जब कि वर कन्या विवाह वेदी में आते हैं तब मंगलाष्टक बोलकर परस्पर वरमाला पहनाई जाती है। उसी का मुहूर्त माना जाता है। अग्रवालों में वर के मण्डप में आते ही इस समय तीन फेरे करा लिया जाते हैं पीछे विवाह विधि में शेष चार फेरे होते हैं।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कन्या को स्नान कराके स्त्रियां वर के स्थान (जनिवासा) पर वर को स्नान कराने आवें, और वर मंदिर पास में हो तो दर्शन कर ठीक मुहूर्त से १५ मिनिट पहले मंडप में आजाय दरवाजे पर कन्या की माता चांवल का छोटासा चौक पूर कर पाटा रखे और जलधर वर के पैर जल से धोवे फिर आरती करे। कन्या का मामा वर को तिलक कर एक रुप्या व श्रीफल भेंटकर साथ में वेदीपर लाकर गादी पर पूर्व मुख खड़ा करदे। पीछे कन्या को भी गादीपर लाकर वर के सामने पश्चिम मुख खड़ा करदे। बीच में एक डुपट्टा (अन्तर्पट) लगादे जिसे दो व्यक्ति पकड़ रखें। वर और कन्या को एक एक पुष्पहार देदे। वर और कन्या के मुंह में इस समय पान सुपारी न हो और न कन्या चप्पलें पहिने वेदी में आवे। गृहस्थाचार्य आगे लिखा मंगलाष्टक पढे और ठीक मुहूर्त पर कन्या वर को और वर कन्या को पुष्पमाला पहना दे। पीछे दोनों पूर्व मुख होकर गादी पर बैठ जावे कन्या वर के दक्षिण ओर रहे। गृहस्थाचार्य वर से मंगल कलश स्थापन करावे। कलश में शुद्ध जल, सुपारी, हल्दी गांठ, एक रुप्या, पंच-रत्न पुडी (यह सराफा बाजार में एक १) करीब में आती है) और पुष्प डालकर श्रीफल व लालचोल से ढक लच्छे से बांधे और पान रखकर कागज की माला पहनावे।

मंगल कलश स्थापन मंत्र

ओमद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदर्हद्‌ ब्रह्मणो मतेऽस्मिन्‌ विधीयमान विवाह कर्मणि अमुक वीर निर्वाण संवत्सरे अमुक तिथौ अमुक दिने शुभ लग्ने भूमि शुद्धयर्थं

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पात्रशुद्ध्यर्थं क्रियाशुद्ध्यर्थं शान्त्यर्थं पुण्यहवाचनार्थं नवरत्न गंध पुष्पा क्षत बीज पूरादि शोभितं शुद्ध प्रासुकतीर्थ जल पूरितं मंगलकलशस्थापनम् करोमि भूर्वींद्वीं ह्सः स्वाहा ।

नोट—इसे पुण्याहवाचन कलश भी कहते हैं ।

मंगलाष्टक ।

श्रीमन्नम्रसुरासुरेन्द्रमुकुटप्रद्योतरत्नप्रभा । भास्वत्पादनखेंदवः प्रवचनांभोधींदवः स्थायिनः ॥ ये सर्वे जिनसिद्ध सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः । स्तुत्या योगिजनैश्च पंचगुरवः कुर्वंतु ते मंगलम् ॥१॥ अर्हंतो भगवन्त इन्द्र महिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः । आचार्या जिनशासनोन्नोतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः ॥ श्रीसिद्धांतसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधारकाः । पंचैतेपरमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥२॥ सम्यग्दर्शनबोधवृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं । मुक्तिश्रीनगराधिनाथाजिनपत्युक्तोपवर्गप्रदः ॥ धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रयालयं । प्रोक्तं च त्रिविधंचतुर्विधममी कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥३॥ सर्पोहारलता भवत्यसिलतासत्पुष्पदामायते । संपद्येत रसायनं विषमपि प्रीतिं विधत्ते रिपुः॥ देवाः यान्ति वशं प्रसन्नमनसः किंवा वहु ब्रूमहे । धर्मादेव नभोऽपि वर्षति मृशं

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कुर्यात् सदा मंगलम् ॥४॥ ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिं गताः पंच ये । ये चाष्टांगमहानिमित्तकुशलाश्चाष्टौविधाश्चारणाः ॥ पंचज्ञानधरास्त्रयोपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वराः । सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥५॥ कैलाशो वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरी । चम्पा वा वसुपूज्यसज्जिनपते सम्मेदशैलोऽर्हताम् ॥ शेषाणामपि चोर्जयंत शिखरी नेमीश्वरस्यार्हतः ॥ निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥ ६ ॥ ज्योतिर्व्यंतरभावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः । जम्बूशाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा वक्षारूप्याद्रिषु । इष्वाकारगिरौ च कुंडलनगे द्वीपे च नंदीश्वरे । शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वंतु ते मंगलम् ॥ ७ ॥ यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो । यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक् ॥ यः कैवल्यपुर प्रवेश महिमा संभावितः स्वर्गिभिः । कल्याणानि च तानि पंच सततं कुर्वंतु ते मंगलम् ॥८॥ इत्थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्यसंपत्प्रदम् । कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणांमुखतः ॥ ये शृण्वंति पठंति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता । लक्ष्मीराश्रयते व्यापाय रहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि ॥९॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पूजन प्रारम्भ ।

ओं जय, जय, जय । नमोऽस्तु, नमोऽस्तु, नमोस्तु
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं ॥

(ओं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः) चत्तारि मंगलं अरिहन्त मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णतो धम्मो मंगलं । चत्तारिलोगुत्तमा, अरिहंत लोगुत्तमा,सिद्ध लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा, चत्तारि-सरणं पव्वज्जामि—अरिहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि पण्णत्तो धम्मो-सरणं पव्वज्जामि । (ओं नमोर्हते स्वाहा)

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुस्थितोऽपि वा ।
ध्यायेत्पपञ्च नमस्कारं, सर्वं पापैः प्रमुच्यते ॥१॥
अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यःस्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः ॥२॥
अपराजित—मन्त्रोऽयं, सर्व—विघ्न विनाशनः ।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः ॥ ३ ॥
एसो पंच णमोयारो; सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होई मंगलम् ॥४॥
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः ।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहम् ॥५॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कर्माष्टक—विनिर्मुक्तं-मोक्ष-लक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादि-गुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यहम् ॥६॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी—भूतपन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे ॥ ७ ॥

(पुष्पांजलि क्षेपे)

उदकचन्दनतन्दुल पुष्पकैः चरुसुदीप-सुधूप—फलार्घ्यकैः।
धवलमंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाम, न्वहं यजे ॥

ओं ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामधेयेभ्यो ऽर्घ्यम्।

देवशास्त्रगुरु पूजा का अर्घ

जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरूँ।
वर धूप निर्मल फल विविध बहु, जनम के पातक हरूँ॥
इह भांति अर्घ चढ़ाय नित भवि,करत शिव पंकति मचूँ।
अरिहंत श्रुत सिद्धांत गुरु निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूं ॥

दोहा—वसुविध अर्घ संजोयके, अति उछाह मन कीन।
जासों पूजों परम पद, देव शास्त्र गुरु तीन॥

ओं ह्रीं देवशास्त्र गुरुभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये ऽर्घ्यम्।

—: श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरों का अर्घ :—

जल फल आठों दर्व अरघ कर प्रीति धरी है।
गणधर इन्द्रनि हूतैं, थुति पूरी न करी है॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

द्यानत सेवक जानके (हो) जगतै लेहु निकार।
सीमन्धर जिन आदि दे, बीस विदेह मँझार॥
श्री जिनराज हो, भव तारण तरण जिहाज।

ओं ह्रीं श्री सीमंधरादि विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यम्।

— कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयों का अर्घ —

यावन्ति जिन-चैत्यानि, विद्यन्ते भुवन-त्रये।
तावंति सततं भक्त्या, त्रिः परीत्य नमाम्यहम्॥

ओं ह्रीं श्री त्रिलोकसंबंधि कृत्रिमाकृत्रिमजिन
बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवदेव पूजन

अरिहन्तसिद्धसाधुत्रितयं, जिनधर्मबिम्बवचनानि।
जिननिलयान्नवदेवान्, संस्थापये भावतो नित्यम्॥१॥

ओं ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः पुष्पांजलिं क्षिपामि।

ये घाति-जाति-प्रतिघात-जातं, शक्राद्यलंघ्यंजगदेकसारम्।
प्रपेदिरेऽनंतचतुष्टयं तान्, यजे जिनेन्द्रानिह कर्णिकायाम्॥

ओं ह्रीं श्री अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यम्॥१॥

निःशेषबन्धक्षयलब्धशुद्ध,—बुद्धस्वभावनिजसौख्यवृद्धान्।
आराधये पूर्वदले सुसिद्धान्, स्वात्मोपलब्ध्यै स्फुटमष्टधेष्ट्या॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ओं ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम् ॥२॥

ये पञ्चधाचारमरं मुमुक्षू नाचारयन्ति स्वयमा–चरन्तः ।
अभ्यर्चये दक्षिणदिग्दले ता, नार्यवर्यान्स्वपरार्थचर्यान् ॥

ओं ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिने अर्घ्यम् ॥३॥

येषामुपान्त्यंसमुपेत्य शास्त्रा, ण्यधीयते मुक्तिकृते विनेयाः ।
अपश्चिमान्पश्चिमदिग्दलेऽस्मिन् नमूनुपाध्यायगुरून्महामि

ओं ह्रीं श्री उपाध्यायपरमेष्ठिने अर्घ्यम् ॥४॥

ध्यानैकतानानवहिः प्रचारान्, सर्वंसहान्निर्वृत्ति–साधनार्थं ।
संपूजयाम्युत्तरदिग्दले तान्, साधूनशेषान् गुणशीलसिंधून् ॥

ओं ह्रीं श्री साधुपरमेष्ठिने अर्घ्यम् ॥५॥

आराधकानभ्युदयं समस्तान्निःश्रेयसे वा धरति ध्रुवं यः ।
तं धर्ममाग्नेयविदिग्दलांते, संपूजये केवलिनोपदिष्टम् ॥

ओं ह्रीं श्री जिनधर्माय अर्घ्यम् ॥६॥

सुनिश्चितासंभवबाधकत्वात्, प्रमाणभूतं सनयप्रमाणम् ।
यजे हि नानाष्टकभेदवेदं, मत्यादिकं नैर्ऋतकोणपत्रे ॥७॥

ओं ह्रीं श्री जिनागमाय अर्घ्यम् ॥७॥

व्यपेतभूषायुध–वेशदोषा, नुपेत–निःसंगत यार्द्रमूर्तीन् ।
जिनेन्द्रबिंबान्भुवनत्रयस्थान्, समर्चये वायुविदिग्दलेऽस्मिन् ॥

ओं ह्रीं श्री जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ॥८॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

शालत्रयान्सद्मनि केतुमाम, स्तम्भालयान्मंगल मंगलाढ्यान् ।
गृहान् जिनानामकृतानकृताँश्च, भूतेशकोशस्थदले यजामि ॥
ओं ह्रीं श्री जिनचैत्यालयेभ्यः अर्घ्यम ॥९॥

मध्येकर्णिकमर्हदार्यमनघं बाह्येऽष्टपत्रोदरे ।
सिद्धान् सूरिवरांश्च पाठकगुरून् साधूंश्च दिक् पत्रगान् ॥
सद्धर्मागम-चैत्य-चैत्य निलयान् कोणस्थदिक्पत्रगान् ।
भक्त्या सर्वसुरासुरेन्द्रमहितान् तानष्टधेष्ट्या यजे ॥१०॥
ओं ह्रीं श्री अर्हदादिनवदेवेभ्यः पूर्णार्घ्यम् ॥१०॥

विनायक यन्त्र पूजा

परमेष्ठिन् ! जगत्त्राण करणे मंगलोत्तम ।
इतः शरण ! तिष्ठ त्वं, सन्निहितोऽस्तु पावन ॥
ओं ह्रीं असिआउसा मंगलोत्तमशरणभूतेभ्यः पुष्पांजलिं क्षिपामि ।

पंकेरुहायातपराग पुञ्जैः, सौगन्ध्यमद्भिः सलिलैः पवित्रैः ।
अर्हत्पदाभाषित मंगलादीन्, प्रत्यूहनाशार्थमहं यजामि ॥
ओं ह्रीं श्री मंगलोत्तमशरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्यो जलम् ॥१॥

काश्मीर-कर्पूर-कृतद्रवेण, संसार-तापापहृतौ धुतेन ।
अर्हत्पदा भाषित मंगलादीन्, प्रत्यूह नाशार्थमहं यजामि ॥
ओं ह्रीं श्री मंगलोत्तमशरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्यः चंदनम् ॥२॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

शाल्यक्षैतरक्षत-मूर्तिमद्भि-रब्जादिवासेन सुगन्धवद्भिः ॥अर्ह.॥

ओं ह्रीं श्री मंगलोत्तमशरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्यः अक्षतान् ॥३॥

कदंबजात्यादिभवैः सुरद्रुमै,र्जातैर्मनोजातविपाशदक्षैः ॥अर्ह.॥

ओं ह्रीं श्री मंगलोत्तमशरणभूतेभ्य; पंचपरमेष्ठिभ्यः पुष्पम् ॥४॥

पीयूषपिंडैश्च शशांककांति--स्पर्द्धाद्भिरिष्टैर्नयन-प्रियैश्च ॥अर्हं.

ओं ह्रीं श्री मंगलोत्तमशरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्यः नैवेद्यम् ॥५॥

ध्वस्तांधकारप्रसरैः सुदीपै,र्घृतोद्भवैरत्नविनिर्मितै र्वा ॥अर्ह.॥

ओं ह्रीं श्री मंगलोत्तमशरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्यः दीपं ॥६॥

स्वकीय धूमेन नभोवऽकाश व्याप्द्भिरुद्यैश्च सुगंधधूपैः॥अर्हं॥

ओं ह्रीं श्री मंगलोत्तमशरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्यः धूपं ॥७॥

नारंग पूगादिफलैरनर्घ्यै, र्हृन्मानसादिप्रियतर्पकैश्च ॥अर्ह.॥

ओं ह्रीं श्री मंगलोत्तमशरणभूतेभ्य; पंचपरमेष्ठिभ्य; फलं ॥८॥

अंभश्चन्दन नन्दनाक्षत तरूद्भूतै र्निवेद्यैर्वरै ।
दीपैर्धूप फलोत्तमैः समुदितै रेभिः सुपात्रस्थितैः ॥
अर्हत्सिद्धसुसूरिपाठकमुनीन्, लोकोत्तमान्मंगलान् ।
प्रत्यूहौघनिवृत्तये शुभकृतः सेवे शरण्यानहम् ॥

ओं ह्रीं श्री मंगलोत्तमशरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं ॥९॥

कल्याणपंचक कृतोदयमाप्तमीश-
महन्तमच्युत चतुष्टयभासुरांगम् ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

स्याद्वादवागमृत-सिंधुशशांक कोटि--
मर्चे जलादिभिरनंतगुणालयं तम् ॥१॥

ओं ह्रीं श्री अनन्तचतुष्टयसमवशरणादिलक्ष्मीबिभ्रतेऽर्हत्पर-
मेष्ठिने अर्घ्यम् !

कर्माष्टकेध्म चय मुत्पथ माशु हुत्वा।
सद्ध्यानवह्निविसरे स्वयमात्मवन्तम्।
निश्रेयसामृतसरस्यथ संनिनाय,
तं सिद्धमुच्चपदर्द परिपूजयामि ॥ २ ॥

ओं ह्रीं श्री अष्टकर्मकाष्ठगणभस्मीकृतेसिद्धपरमेष्ठिनेऽर्घ्यम्।

स्वाचार-पंचकमपि स्वयमाचरंति,
ह्याचारयन्ति भविका न्निजशुद्धि-भाजः।
तानर्चयामि विविधैः सलिलादिभिश्च,
प्रत्यूहनाशनविधौ निपुणान् पवित्रैः ॥३॥

ओं ह्रीं श्री पंचाचारपरायणाय आचार्यपरमेष्ठिनेऽर्घ्यम्।

अंगांग-वाह्यपरिपाठन लालसाना-
मष्टांगभानपरिशीलन--भवितानाम्।
पादारविंदयुगलं खलु पाठकानां,
शुद्धैर्जलादिवसुभिः परिपूजयामि ॥४॥

ओं ह्रीं श्री द्वादशांगपठनपाठनोद्यताय उपाध्यायपरमेष्ठिनेऽर्घ्यम्।

आराधना सुखविलास--महेश्वराणां,
सद्धर्मलक्षणमयात्मविकस्वराणाम्!

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

स्तोतुं गुणान् गिरिवनादिनिवासिनां वै,
एषोऽर्घतश्चरणनीठभुवं यजामि ॥ ५ ॥
ओं ह्रीं श्री त्रयोदशप्रकारचारित्राराधकसाधुपरमेष्ठिनेऽर्घ्यम् ।

अर्हन्मंगलमर्चामि, जगन्मंगल दायकम् !
प्रारब्धकर्मविघ्नौघ-प्रलयप्रदमम्बुभिः ॥६॥
ओं ह्रीं श्री अर्हन्मंगलायार्घ्यम् ॥६॥

चिदानन्दलसद्वीचि-मालिनं गुणशालिनम् ।
सिद्धमंगलमर्चेऽहं, सलिलादिभिरुज्ज्वलैः ॥
ओं ह्रीं श्री सिद्धमंगलायार्घ्यम् ॥७॥

बुद्धिक्रियारसतपो-विक्रियौषधिमुख्यकाः ।
ऋद्धयो यं न मोहंति, साधुमंगलमर्चये ॥८॥
ओं ह्रीं श्री साधुमंगलायार्घ्यम् ॥८॥

लोकालोकस्वरूपज्ञ-प्रज्ञप्तं धर्मं मंगलम् ।
अर्चे वादित्रनिर्घोष--पूरिताशं वनादिभिः ॥९॥
ओं ह्रीं श्री केवलिप्रज्ञप्तधर्म मंगलायार्घ्यम् ॥९॥

लोकोत्तमोऽर्हन् जगतां, भवबाधाविनाशकः ।
अर्च्यतेऽर्घेण स मया, कुकर्मगणहानये ॥१०॥
ओं ह्रीं श्री अर्हल्लोकोत्तमायार्घ्यम् ॥१०॥

विश्वाग्रशिखरस्थायां, सिद्धो लोकोत्तमो मया ।
महयते महसामंद,-चिदानन्दथुमेदुरः ॥११॥
ओं ह्रीं श्री सिद्धलोकोत्तमायार्घ्यम् ॥११॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

रागद्वेषपरित्यागी, साम्यभावावबोधकः ।
साधुलोकोत्तमोऽर्घेण, पूज्यते सलिलादिभिः ॥१२॥
ओं ह्रीं श्री साधुलोकोत्तमायार्घ्यम् ॥१२॥

उत्तमक्षमया भास्वान्, सद्धर्मो विष्टपोत्तमः ।
अनंतसुख संस्थानं यज्यतेऽम्भः सुमादिभिः ॥१३॥
ओं ह्रीं श्री केवलिप्रज्ञप्तधर्मलोकोत्तमायार्घ्यम् ॥१३॥

सदार्हन्शरणं मन्ये नान्यथा शरणं मम ।
इति भावविशुद्ध्यर्थं,-मर्हयामि जलादिभिः ॥१४॥
ओं ह्रीं श्री अर्हच्छरणायार्घ्यम् ।

व्रजामि सिद्धशरणं, परावर्त्तनपंचकम् ।
भित्वा स्वसुखसंदोह,--सम्पन्नमिति पूजये ॥१५॥
ओं ह्रीं श्री सिद्धशरणायार्घ्यम् ।

आश्रये साधुशरणं, सिद्धांत प्रति पादनैः ।
न्यक्कृताज्ञानतिमिर,मिति शुद्धया यजामि तम् ॥१६॥
ओं ह्रीं श्री साधुशरणायार्घ्यम् ॥१६॥

धर्म एव सदा बन्धुः, स एव शरणं मम ।
इह वान्यत्र संसारे, इति तं पूजयेऽधुना ॥१७॥
ओं ह्रीं श्री केवलिप्रज्ञप्त धर्मशरणायार्घ्यम् ॥१७॥

संसार दुःख हनने निपुणं जनानाम् ।
नाद्यन्त चक्रमिति सप्तदश प्रमाणम् ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

संपूजये विविधभक्ति भरावनम्रः ।
शांतिप्रदं भुवनमुख्यपदार्थ सार्थैः ॥१८॥
ओं ह्रीं श्री अर्हदादिसप्तदश मंत्रेभ्यः समुदायार्घ्यम् ।
इसके पश्चात् ९ बार णमोकार मन्त्र का जाप्य करें ।

जयमाला ।

विघ्नप्रणाशनविधौ सुरमर्त्यनाथा ।
अग्रेसरं जिन वदन्ति भवंतमिष्टम् ॥
आनाद्यनंतयुगवर्तिनमत्र कार्ये-
गार्हस्थ्यधर्मविहितेऽहमपि स्मरामि ॥
विनायकः सकलधर्मिजिनेषु धर्मम्-
द्वेधा नयत्यविरतं दृढसप्तभंग्या ।
यद्ध्यानतो नयनमावमुजभ्रनेन-
बुद्धः स्वयं सकलनायक इत्यवाप्तेः ॥
गणानां मुनीनामधीशत्वतस्ते-
गणेशाख्यया ये भवन्तं स्तुवन्ति ।
सदा विघ्नसंदोहशांतिर्जनानां,
करे संलुठत्यायतश्रेयसानाम् ॥
अतस्त्वमेवासि विनायको मे-
इष्टेष्टयोगानवरुद्ध-भावः ।
त्वन्नाममात्रेण पराभवन्ति-
विघ्नारयस्तर्हि किमत्र चित्रम् ॥
जय जय जिनराज त्वद्गुणान्को व्यनक्ति,
यदि सुरगुरुरिन्द्रः, कोटि वर्ष प्रमाणं ।
वदितुमभिलषेद्वा पारमाप्नोति नो चेत्.
कति च इह मनुष्याः स्वल्पबुद्ध्या समेताः ॥७॥
ओं ह्रीं श्री मंगलोत्तमशरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्यो जयमालाऽर्घ्यम् ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्रियं बुद्धिमनाकूलयं, धर्मप्रीति विवर्द्धनम् ।
गृहिधर्मे स्थिति भूत्वा, श्रेयसं मे दिश त्वरा ॥
इत्याशीर्वादः ।

सिद्ध--पूजा ।

सिद्धान् विशुद्धान्वसुकर्म मुक्तान् त्रैलोक्यशीर्षे स्थितचिद्विलासान्
संस्थापये भावविशुद्धिदातॄन् सन्मंगलं प्राज्यसमृद्धयेऽहम् ॥१॥
ओं ह्रीं वसुकर्म रहित सिद्धेभ्यः पुष्पांजलिं क्षिपामि ।

ओं ह्रीं नीरजसे नमः । (जल द्वारा भूमि शुद्ध करे)
ओं ह्रीं दर्पमथनाय नमः । जलम् ॥ ओं ह्रीं शीलगंधाय नमः ।
चंदनम् ॥ ओं ह्रीं अक्षताय नमः । अक्षतान् ॥ ओं ह्रीं विमलाय
नमः । पुष्पम् ॥ ओं ह्रीं परमसिद्धाय नमः । नैवेद्यम् ॥ ओं ह्रीं
ज्ञानोद्योताय नमः । दीपम् ॥ ओं ह्रीं श्रुतधूपाय नमः । धूपम् ॥
ओं ह्रीं अभीष्टफलदाय नमः । फलम् ॥

अष्टकर्म गणनाशकारकान्, कष्टकुड्डविमुदष्टगारुडान् ।
स्पष्टज्ञानपरिमीतविष्टपान्, अर्घ्यतोऽघनाशनाय पूजये ॥
ओं ह्रीं श्री वसुकर्म रहितेभ्यः सिद्धेभ्योऽर्घ्यम् ।

द्वितीय कटनीस्थ श्रुत पूजा ।

द्वादशांगमखिलं श्रुतं मया, स्थाप्य पाणिपरिपीडनोत्सवे ।
पूज्यते यदधिधर्मसंभवो, द्वैधयैव जगतां प्रसीदति ॥१॥
ओं ह्रीं श्री द्वादशांगाश्रुताय अर्घ्यम् ।

तृतीय कटनीस्थ गुरु पूजा ।

ऋद्धयो बलरसादि-विक्रियैणाक्ष्यमंत्रकमहानसादिकाः ।
यत्क्रमांबुरुहवासमासते, तान् गुरूनभिमहामि धर्मकैः ॥२॥
ओं ह्रीं श्री महर्द्धिधारकपरमर्षिभ्योऽर्घ्यम् ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

धर्म चक्र पूजा

अष्टमंगलमिदं पदांबुजे, भासते शतसुमंगलौघदम् ।
धर्मचक्रमाभिपूजये वरं, कर्मचक्र-परिणाशनोद्यतम् ॥ ३॥

ओं ह्रीं श्री धर्मचक्रायार्घ्यम ।

प्रदान और वरण

यन्त्र की पूजन के पश्चात् कन्या के पिता और मामा, हो सके तो दोनों ही सपत्नीक, यंत्र के सामने हाथ जोडकर खड़े होवें और वर के पिता और मामा भी उनके सामने अर्थात् यंत्र के पीछे खडे हो जावें। गृहस्थाचार्य कन्या के पिता से उनके बाद में मामा से सबके समक्ष कन्या की सम्मति पूर्वक वर के प्रति निम्न प्रकार वाक्य बुलवावें :—" मैं आपको धर्माचरण में और समाज की एवं देश की सेवा में सहयोग देने के लिए अपनी यह कन्या प्रदान करना चाहता हूं। आप इसे स्वीकार करें। और धर्म से पालन करें।

कन्या के पिता और मामा के इस प्रकार कहने पर वर भी यन्त्र को नमस्कार कर कहे कि " मै आपकी कन्या को स्वीकार करता हूं। और इसका धर्म से, अर्थ से और काम से पालन करूंगा"।

इस अवसर पर समस्त स्त्री पुरुष वर कन्या पर अपनी अनुमोदना के साथ पुष्पवृष्टि करें। कन्या के पिता झारी या कलशी में जल लेकर वर के सीधे हाथ की कनिष्ठा अँगुली से बांये हाथ की कनिष्ठा अंगुली स्पर्श कराकर उन अंगु-लियों पर निम्न प्रकार मन्त्र पढकर जलधारा छोडे। गृहस्था-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चार्य पिता से यह मन्त्र कहलावें। "ओमद्य जंबूद्वीपे भरत-
१
क्षेत्रे आर्यखण्डे अमुक नगरे अस्मिन् स्थाने अमुक वीर निर्वाण संवत्सरे अमुक मासे अमुक तिथौ अमुक वासरे जैन धर्म परिपालकाय अमुक गोत्रोत्पन्नाय अमुकस्य पुत्राय अमुकस्य पौत्राय अमुक नाम्ने कुमाराय जैनधर्म परिपालकस्य अमुकगोत्रोत्पन्नस्य अमुकस्य पुत्रीं अमुकस्य पौत्रीं अमुक नाम्नीं इमां कन्या प्रददामि। ओं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते वर्धमानाय श्रीबलायुरारोग्य संतानाभिवर्धनं भवतु झ्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

उक्त प्रदान और वरण की विधि में प्रदान से कन्यादान का मतलब, जैसा कि अन्य संप्रदायों में माना जाता है वैसा यहां नहीं है। कन्या अन्य वस्तुओं की भांति दान देने की वस्तु नहीं मानी गई है। यहां तो सिर्फ सबके सामने विवाह की एक विधि मात्र बतलाई है।

हवन

प्रदान और वरण के पश्चात् हवन के लिए स्थंडिल के चारों ओर नीचे तीन बार लच्छा लपेटकर उस स्थंडिल पर समिधा जमाई जावे और चारों कोनों के दीपक प्रज्वलित कर कपूर वर के हाथ देकर "ओं ओं ओं ओं रं रं रं रं स्वाहा अग्निं स्थापयामि" इस मन्त्र से दीपक द्वारा कपूर प्रज्वलित कर समिधा पर रखावें और गृहस्थाचार्य चाटू से घृत लेपकर समिधा को ठीक करे।

१ अमुक शब्द जहां जहां है वहां जो नाम हो वह लेना चाहिये।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

स्थंडिल पर ही चौकोण तीर्थंकर कुंड, गोल गणधर कुंड और त्रिकोण सामान्य केवली कुन्ड की स्थापना कर तीन अर्घ निम्न प्रकार श्लोक पढ़कर वर कन्या से चढ़वावें।

श्रीतीर्थनाथपरिनिर्वृतपूज्यकाले,
आगत्य वह्निसुरपा मुकुटोल्लसद्भिः।
वह्निव्रजै जिनपदेहमुदारभक्त्या,
देहुस्तदग्निमहमर्चयितुं दधामि ॥१॥

ओं ह्रीं चतुरस्र तीर्थंकरकुण्डे गार्हपत्याऽग्नयेऽर्घ्यम्।

गणाधिपानां शिवयातिकाले ऽग्नीन्द्रोत्तमांगस्फुरदुग्ररोचीः।
संस्थाप्य पूज्यश्च समाह्वनीयो, विवाहशांत्यै विधिना हुताशः॥

ओं ह्रीं वृत्ते गणधर कुण्डे आह्वनीयाग्नयेऽर्घ्यम्।

श्री दाक्षिणाग्निः परिकल्पितश्च, किरीटदेशात् प्रणताग्निदेवैः।
निर्वाणकल्याणकपूतकाले, तमर्चये विघ्न विनाशनाय ॥३॥

ओं ह्रीं त्रिकोणे सामान्य केवलिकुण्डे दक्षिणाग्नयेऽर्घ्यम्।

निम्नलिखित आहूति मन्त्रों का उच्चारण गृहस्थाचार्य करे और वही चाटू से घृत की आहूति दे। वर और कन्या हाथ को सीधा रखकर मध्यमा और अनामिका अंगुलियों पर साकल्य (हवन द्रव्य) रखकर स्वाहा बोलते हुए आहूति दें।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आहुति मन्त्र

पीठिका मन्त्र

ओं सत्यजाताय नमः स्वाहा ॥१॥ ओं अर्हज्जाताय नमः स्वाहा ॥२॥ ओं परमजाताय नमः स्वाहा ॥ ३ ॥ ओं ओं अनुपमजाताय नमः स्वाहा ॥ ४ ॥ ओं स्वप्रधानाय नमः स्वाहा ॥५॥ ओं अचलाय नमः स्वाहा ॥६॥ ओं अक्षताय नमः स्वाहा ॥७॥ ओं अव्याबाधाय नमः स्वाहा ॥८॥ ओं अनन्तज्ञानाय नमः स्वाहा ॥ ९ ॥ ओं अनन्तदर्शनाय नमः स्वाहा ॥१० ॥ ओं अनन्तवीर्याय नमः स्वाहा ॥११॥ ओं अनन्तसुखाय नमः स्वाहा ॥ १२ ॥ ओं नीरजसे नमः स्वाहा ॥१३॥ ओं निर्मलाय नमः स्वाहा ॥१४॥ ओं अच्छेद्याय नमः स्वाहा ॥१५॥ ओं अभेद्याय नमः स्वाहा ॥१६॥ ओं अजराय नमः स्वाहा ॥१७॥ ओं अमराय नमः स्वाहा ॥ १८ ॥ ओं अप्रमेयाय नमः स्वाहा ॥ १९ ॥ ओं अगर्भवासाय नमः स्वाहा ॥२०॥ ओं अक्षोभाय नमः स्वाहा ॥२१॥ ओं अविलीनाय नमः स्वाहा ॥२२॥ ओं परमघनाय नमः स्वाहा ॥२३ ॥ ओं परमकाष्ठायोगरूपाय नमः स्वाहा ॥२४॥ ओं लोकाग्रवासिने नमो नमः स्वाहा ॥ २५ ॥ ओं परम सिद्धेभ्यो नमोनमः स्वाहा ॥२६॥ ओं अर्हत्सिद्धेभ्यो नमोनमः स्वाहा ॥२७॥ ओं केवलसिद्धेभ्यो नमोनमः स्वाहा ॥२८॥ ओं अन्तःकृत् सिद्धेभ्यो नमोनमः स्वाहा ॥२९॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ओं परमसिद्धेभ्यो नमोनमः स्वाहा ॥३०॥ ओं अनादि पर-म्परासिद्धेभ्यो नमोनमः स्वाहा ॥ ३१ ॥ ओं अनाद्यनुपम सिद्धेभ्यो नमोनमः स्वाहा ॥३२॥ ओं सम्यग्दृष्टे ! सम्य-ग्दृष्टे ! आसन्नभव्य ! आसन्नभव्य ! निर्वाणपूजार्ह ! निर्वाण पूजार्ह ! अग्नीन्द्र ! अग्नीन्द्र ! स्वाहा ॥३३॥

इस प्रकार आहूति देकर गृहस्थाचार्य नीचे लिखा काम्यमंत्र पढ़कर एक आहूति दे और वर कन्या पर पुष्प क्षेपे। इसीप्रकार आगे भी करे।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु। अपमृत्युविनाशन भवतु।

जाति मन्त्र।

ओं सत्यजन्मनः शरणं प्रपद्ये नमः ॥१॥ ओं अर्हज्ज-न्मनः शरणं प्रपद्ये नमः ॥२॥ ओं अर्हन्मातुः शरण प्रपद्ये-नमः ॥३॥ ओं अर्हत्सुतस्य शरणं प्रपद्ये नमः ॥ ४ ॥ ओं-अनादिगमनस्य शरणं प्रपद्ये नमः ॥५॥ ओं अनुपमजन्मनः शरणं प्रपद्ये नम ॥६॥ ओं रत्नत्रयस्य शरणं प्रपद्ये नमः ॥ ७ ॥ ओं सम्यग्दृष्टे ! सम्यग्दृष्टे ! ज्ञानमूर्ते ! ज्ञानमूर्ते सरस्वति ! सरस्वति ! स्वाहा ॥८॥

सेवाफलं षट् परमस्थानं भवतु। अपमृत्युविनाशनं भवतु।

निस्तारक मंत्र।

ओं सत्यजाताय नमः स्वाहा ॥ १ ॥ ओं अर्हज्जाताय नमः स्वाहा ॥२॥ ओं षट्कर्मणे स्वाहा ॥३॥ ओं ग्रामपतये

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

स्वाहा ।.४।। ओं अनादिश्रोत्रियाय स्वाहा ।।५।। ओं स्नातकाय स्वाहा ।।६ ।। ओं श्रावकाय स्वाहा ।।७।। ओं देवब्राह्मणाय स्वाहा ।।८।। ओं सुब्राह्मणाय स्वाहा ।।९।। ओं अनुपमाय स्वाहा ।।१०।। ओं सम्यग्दृष्टे ! सम्यग्दृष्टे ! निधिपते निधिपते ! वैश्रवण ! वैश्रवण ! स्वाहा ।।११।।

सेवाफलं षट् परमस्थानं भवतु । अपमृत्युविनाशनं भवतु ।

ऋषि मंत्र ।

ओं सत्यजाताय नमः स्वाहा ।।१ ।। ओं अर्हज्जाताय नमः ।।२।। ओं निर्ग्रन्थाय नमः ।।३।। ओं वीतरागाय नमः ओं महाव्रताय नमः ।।४।। ओं त्रिगुप्तये नमः ।।६।। ओं महायोगाय नमः ।।७।। ओं विविधयोगाय नमः ।।८।। ओं विवर्द्धये नमः ।।९।। ओं अंगधराय नमः ।।१० ।। ओं गणधराय नमः ।।१२।। ओं परमर्षिभ्यो नमः ।।१३।। ओं अनुपमजाताय नमः ।। १४ ।। ओं सम्यग्दृष्टे ? सम्यग्दृष्टे ? भूपते ! भूपते ? नगरपते ? नगरपते ! कालश्रमण ! कालश्रमण ! स्वाहा ।।१५।।

सेवाफलं षट् परमस्थानं भवतु । अपमृत्यु विनाशनं भवतु ।

सुरेन्द्र मंत्र ।

ओं सत्यजाताय नमः स्वाहा ।। १ ।। ओं अर्हज्जाताय नमः ।।२।। ओं दिव्यजाताय स्वाहा ।। ३ ।। ओं दिव्यार्चिर्जा-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ताय स्वाहा ॥४॥ ओं नेमिनाथाय स्वाहा ॥ ५ ॥ ओं सौध-र्माय स्वाहा ॥६॥ ओं कल्पाधिपतये स्वाहा ॥७॥ ओं अनु-चराय स्वाहा ॥ ८ ॥ ओं परम्परेन्द्राय स्वाहा ॥ ९ ॥ ओं अहमिन्द्राय स्वाहा ॥१०॥ ओं परमार्हजाताय स्वाहा ॥११॥ ओं अनुपमाय स्वाहा ॥१२॥ ओं सम्यग्दृष्टे ! सम्यग्दृष्टे ! कल्पपपते ! कल्पपपते ! दिव्यमूर्ते ! दिव्यमूर्ते ! वज्रनामन् ! वज्रनामन् ! स्वाहा ॥१३॥

सेवाफलं षट् परमस्थानं भवतु । अपमृत्युविनाशनं भवतु ।

परमराजादि मन्त्र ।

ओं सत्यजाताय स्वाहा ॥ १ ॥ ओं अर्हज्जाताय-स्वाहा ॥ २ ॥ ओं अनुपमेन्द्राय स्वाहा ॥ ३ ॥ ओं विज-यार्चिजाताय स्वाहा ॥४॥ ओं नेमिनाथाय स्वाहा ॥५॥ ओं परमजाताय स्वाहा ॥ ६ ॥ ओं परमार्हजाताय स्वाहा ॥७॥ ओं अनुपमाय स्वाहा ॥ ८ ॥ ओं सम्यग्दृष्टे ! सम्यग्दृष्टे ! उग्रतेजः ! उग्रतेजः ! दिशांजन ! दिशांजन ! नेमिविजय ! नेमिविजय ! स्वाहा ॥९॥

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु । अपमृत्युविनाशनं भवतु ।

परमेष्ठि मन्त्र ।

ओं सत्यजाताय नमः स्वाहा ॥१ ॥ ओं अर्हज्जाताय-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

नमः ॥२॥ ओं परमजाताय नमः ॥३॥ ओं परमार्हज्जाताय-नमः ॥४॥ ओं परमरूपाय नमः ॥५॥ ओं परमतेजसे नमः ॥६॥ ओं परमगुणाय नमः ॥ ७ ॥ ओं परमस्थानाय नमः ॥८॥ ओं परमयोगिने नमः ॥ ९ ॥ ओं परमभाग्याय नमः ॥१०॥ ओं परमर्द्धये नमः ॥ ११ ॥ ओं परमप्रसादाय नमः ॥१२॥ ओं परमकांक्षिताय नमः ॥ १३ ॥ ओं परमविजयाय नमः ॥१४॥ ओं परमविज्ञानाय नमः ॥१५॥ ओं परमदर्शनाय नमः ॥१६॥ ओं परमवीर्याय नमः ॥१७॥ ओं परमसुखायनमः ॥१८॥ ओं परमसर्वज्ञाय नमः ॥१९॥ ओं अर्हते नमः ॥२०॥ ओं परमेष्ठिने नमः ॥२१॥ ओं परमनेत्रे नमो नमः ॥२२॥ ओं सम्यग्दृष्टे ! सम्यग्दृष्टे ! त्रैलोक्यविजय ! त्रैलोक्यविजय ! धर्ममूर्ते ! धर्ममूर्ते ! धर्मनेमे ! धर्मनेमे ! स्वाहा ॥२३॥

सेवाफलं षट् परमस्थानं भवतु । अपमृत्युविनाशनं भवतु ।

आहूति मंत्र ।

ओं ह्रां अर्हद्भ्यः नमः स्वाहा ॥१॥ ओं ह्रीं सिद्धेभ्यः स्वाहा ॥२॥ ओं ह्रूं आचार्येभ्यः स्वाहा ॥३॥ ओं ह्रौं उपाध्यायेभ्यः स्वाहा ॥ ४ ॥ ओं ह्रः सर्वसाधुभ्यः स्वाहा ॥५॥ ओं ह्रीं जिनधर्मेभ्यः स्वाहा ॥ ६ ॥ ओं ह्रीं जिनागमेभ्यः स्वाहा ॥ ७ ॥ ओं ह्रीं जिनचैत्येभ्यः स्वाहा ॥ ८ ॥ ओं ह्रीं

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सम्यग्दर्शनाय स्वाहा ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय स्वाहा ॥१०॥ ओं ह्रीं सम्यक्चारित्राय स्वाहा ॥११॥

शांति मन्त्र ।

ओं ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सर्व शांति कुरु कुरु स्वाहा ।

इस मन्त्र की १०८ बार या कमसे कम २७ बार आहुति दें ।
इसके पश्चात् निम्न प्रकार सप्तपदी पूजा करावे ।

सप्तपदी पूजा ।

सज्जातिगार्हस्थ्य-पवित्रजत्वं, सौरेन्द्रसाम्राज्य-जिनेश्वरत्वम् ।
निर्वाणकं चेति पदानि सप्त, भक्त्या यजेऽहं जिनपादपद्मम् ॥

ओं ह्रीं श्री सप्तपरमस्थानेभ्यः पुष्पांजलिं क्षिपामि ।

विमलशीतलसज्जलधारया, सविधबन्धुरशीकरसारया ।
परमसप्तसुस्थानस्वरूपकं परिभजामि सदाष्टविधार्चनैः ॥१॥

ओं ह्रीं श्री सप्तपरमस्थानेभ्यो जलम् ।

मसृणकुंकुमचन्दनसद्रवैः, सुरभितागतषट्पदसद्रवैः ॥परम.॥

ओं ह्रीं श्री सप्तपरमस्थानेभ्यः चन्दनम् ॥२॥

विपुलनिर्मलतंदुलसंचयैः,कृतसुमौक्तिककल्पकनिश्चयैः॥परम.॥

ओं ह्रीं श्री सप्तपरमस्थानेभ्योऽक्षतान् ॥३॥

कुसुमचंपक-पंकजकुंदकैः,सहजजाति-सुगंधविमोदकैः ॥परम॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सकललोकविमोदनकारकैः,श्चरुवरैःसुसुधाकृतिधारकैः।परम.।

ओ ह्रीं श्री सप्तपरमस्थानेभ्यो नैवेद्यम्।

तरलतारसुकांतिसुमुण्डनैः, सदनरत्नचयैरघखण्डनैः ॥परम.॥

ओ ह्रीं श्री सप्तपद्स्थानेभ्यो दीपम्।

अगुरुधूपभवेन सुगंधिना, भ्रमरकोटिसमेन्द्रियबंधिना ॥परम.॥
परमसप्तसुस्थानस्वरूपकं, परिभजामि सदाष्टविधार्चनैः ॥

ओ ह्रीं श्री सप्तपद्स्थानेभ्यो धूपम्।

सुखदपक्वसुशोभनसत्फलैः क्रमुकनिंबुकमोचसुतांगतैः ॥परम.॥

ओ ह्रीं श्री सप्तपद्स्थानेभ्यो फलम्।

जिनवरागमसदगुरूमुख्यकान्, प्रवियजे गुरुसदगुण मुख्यकान्।
सुशुभचन्द्रतरान् कुसुमोत्करैः समयसारपरान्पयसादिकैः ॥८॥

ओ ह्रीं श्री सप्तपद्स्थानेभ्योऽर्घ्यम्।

गठजोड़ा।

हवन और सप्तपदी पूजा के बाद जीवनपर्यन्त पति-पत्नी बनने वाले दम्पती में परस्पर प्रेमभाव का एवं लौकिक और धार्मिक कार्यों में साथ रहने का सूचक ग्रंथिबन्धन (गठजोड़ा) किसी सौभाग्यवती (सुहागिनी) स्त्री के द्वारा कराना चाहिए। कन्या की लुगड़ी (साड़ी) के पल्ले में १ चुअन्नी, १ सुपारी, हल्दीगांठ, सरसों वा पुष्प रखकर उसे बांध ले और उससे वर के दुपट्टे के पल्ले को बांध दे।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ग्रंथिबन्धन मंत्र ।

अस्मिन् जन्मन्येष बन्धो द्वयोर्वै,
कामे धर्मे वा गृहस्थत्वभाजि ।
योगो जातः पंचदेवाग्नि साक्षी,
जायापत्योरंचलग्रंथिबंधात् ॥

हथलेवा (पाणिग्रहण) ।

गठजोडा के पश्चात् कन्या के पिता कन्या के बांये हाथ में और वर के सीधे हाथ में पिसी हुई हल्दी को जल से रकाबी में घोलकर लेपे । लोक में जो पीले हाथ करने की बात कही जाती है यह वही बात है । फिर वर के सीधे हाथ में थोडी सी गीली मेंदी और १ चुअन्नी रख उसपर कन्या का बांया हाथ रखकर वर कन्या के दोनों हाथ जोड दे । इस विधि से कन्या का पिता अपनी कन्या को वर के हाथ में सोंपता है । इसे पाणि ग्रहण भी कहते हैं ।

पाणिग्रहण मंत्र ।

हारिद्रपंकमवलिप्य सुवासिनीभि-
र्दत्तं द्वयोर्जनकयोः खलु तौ गृहीत्वा ।
वामं करं निजसुताभवमग्रपाणिम्,
लिम्पेद्वरस्य च करद्वययोजनार्थम् ॥

फेरे और सप्तपदी ।

हथलेवा के बाद वर कन्या को खडा कराके कन्या को आगे और वर को पीछे रखकर वेदी में चवरी के मध्य में

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

यन्त्र सहित कटनी और हवन की प्रज्वलित अग्नि युक्त स्थंडिल के चारों ओर छः फेरे दिलवावें। इस समय स्त्रियां फेरों के मंगल गीत गावें। वर और कन्या के कपड़ों को संभालते हुए फेरे दिलाना चाहिए। एक दो समझदार स्त्री और पुरुष दोनों को संभालते रहे। छः फेरों के बाद कन्या अपने पूर्व स्थान पर पहले के समान बैठजावें। गृहस्थाचार्य निम्न-प्रकार सात सात बचनों (प्रतिज्ञाओं) को क्रम से पहले वरसे और फिर कन्या से कहलवावे साथ ही स्वयं उनको सरल भाषा में समझाता जाय।

वर की ओर से कन्या के प्रति ७ वचन।

(१) मेरे कुटुम्बी लोगों का यथायोग्य विनय सत्कार करना होगा।

(२) मेरी आज्ञा का लोप नहीं करना होगा ताकि घर में अनुशासन बना रहे।

(३) कठोर बचन नहीं बोलना होगा। क्योंकि इससे चित्त को क्षोभ होकर पारस्परिक द्वेष होजाने की संभावना रहती है।

(४) सत्पात्रों के घर पर आनेपर उन्हें आहार आदि प्रदान करने में कलुषित मन नहीं करना होगा।

(५) मनुष्यों की भीड़ आदि में जहां धक्का आदि लगने की संभावना हो वहां बिना खास कारण के अकेले नहीं जाना होगा।

(६) दुराचारी और नशा करने वाले लोगों के घर पर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

नहीं जाना होगा जिससे ऐसे व्यक्तियों द्वारा अपने सम्मान में बाधा न आ सके।

(७) रात्रि के समय बिना पूछे दूसरों के घर नहीं जाना होगा ताकि लोगों को व्यर्थ ही टीका टिप्पणी करने का मौका न मिले।

ये सात प्रतिज्ञायें तुम्हें स्वीकार करना चाहिए। इन वचनों में गार्हस्थ्य जीवन को सुखद बनाने की बातों का ही उल्लेख है। इनके पालन से घर में और समाज में पत्नी का स्थान आदरणीय बनेगा।

इन प्रतिज्ञाओं को कन्या अपने मुंह से निसंकोच होकर कहे और स्वीकार करे।

कन्याद्वारा वर के प्रति सात वचन।

(१) मेरे सिवाय अन्य स्त्रियों को माता, बहन और पुत्री के समान मानना होगा अर्थात् परस्त्री सेवन का त्याग और स्वस्त्रीसंतोष रखना होगा।

(२) वेश्या, जो परस्त्री से भिन्न मानी जाती हैं उसके सेवन का त्याग करना होगा।

(३) लोक द्वारा निंदनीय और कानून से निषिद्ध द्यूत (जूआ) नहीं खेलना होगा।

(४) न्याय पूर्वक धन का उपार्जन करते हुए वस्त्र आदि से मेरा रक्षण करना होगा।

(५) आपने जो अपने वचनों में मुझसे अपनी आज्ञा मानने की प्रतिज्ञा कराई है उस संबन्ध में धर्मस्थान में जाने

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और धर्माचरण * करने में रुकावट नहीं डालनी होगी।

(६) मेरे संबन्ध की और घर की कोई बात मुझसे नहीं छिपानी होगी क्योंकि मैं भी आपकी सच्ची सलाह देने वाली हूं। क़दाचित उससे आपको लाभ होजाय और अपना संकट दूर हो जाय। साथ ही इससे परस्पर विश्वास भी बढेगा।

(७) अपने घर की गुप्त बात दूसरे के याने मित्र आदि के समक्ष प्रकट नहीं करनी होगी। लोगों की मनोवृत्ति प्रायः यह होती है कि वे दूसरे घर की छोटी सी बात 'तिलका ताड' की उक्ति के समान बडी करके अपवाद फैलादेते हैं।

इन सात प्रतिज्ञाओं को वर स्वीकार करे। इनके सिवा और भी कोई खास बात हो तो विवाह के पहले स्पष्ट कर लेना चाहिए। जिससे दाम्पत्य जीवन आजीवन आनन्द पूर्वक व्यतीत हो। सच यह है कि अपने साफ और शुद्ध परिणाम (नियत) ही से संबन्ध अच्छा रह सकता है।

सप्तपदी के पश्चात् वर को आगे करके सातवां फेरा कराया जाय और अपने पहले के स्थान पर जब आवें तब वे पति पत्नी के रूप में होकर याने स्त्री पति के बांये ओर और पति स्त्री के दाहिने ओर बैठे। इस अवसर पर स्त्रियां मंगलगीत गावें।

---

* अग्रवाल जाति में जैन व अजैन में तथा हूमड जाति में श्वेताम्बर और दिगम्बर में परस्पर विवाह होता है अतः यह प्रतिज्ञा आवश्यक है।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

उक्त सात फेरे या भांवर सात परम स्थानों की प्राप्ति के द्योतक हैं। आगमानुसार संसार में (१) सज्जातित्व (२) सद् गृहस्थत्व (३) साधुत्व (४) इन्द्रत्व (५) चक्रवर्तित्व (६) तीर्थंकरत्व और (७) निर्वाण ये सात परमस्थान माने गये है।

सात फेरे होनेपर नवदम्पति पर निम्नप्रकार मन्त्र द्वारा पुष्प क्षेपण करे।

"ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसाधवः शांति पुष्टिं च कुरुत कुरुत स्वाहा"।

यहांपर संक्षेप में गृहस्थ जीवन के महत्व पर उपदेश देकर अच्छी संस्थाओं को यथाशक्ति दोनों पक्ष की ओर से दान की घोषणा कराकर तत्काल यथास्थान भिजवाने का प्रबन्ध करा देना चाहिए।

इसके बाद कन्यापक्ष की ओर से वर को तिलकपूर्वक १) एक रुपया और श्रीफल भेंटकर हथलेवा छुड़ा देना चाहिए और नवदम्पति खडे होकर मंगलकलश का हाथ में लेंवें। गृहस्थाचार्य पुण्याहवाचन पाठ पढे। और सर्वशांतिर्भवतु वाक्य के आने पर नीचे एक पात्र में जलधारा स्वयं छोडता जाय और नवदम्पति से धारा छुडाता जाय।

पुण्याहवाचन।

ओम् पुण्याहं पुण्याहं। लोकोद्योतनकरातीतकालसंजातनिर्वाणसागरमहासाधुविमलप्रभशुद्धप्रभश्रीधरसुदत्तामलप्रभोद्धराग्निसंयमशिवकुसुमांजलिशिवगणोत्साहज्ञानेश्वर—परमेश्वरविमलेश्वरयशोधरकृष्णमतिज्ञानमतिशुद्धमतिश्रीभद्र-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

शान्तेति चतुर्विंशतिभूतपरमदेवभक्तिप्रसादात्सर्वेषांशांति र्भवतु ।

ओम् सम्प्रतिकालश्रेयस्करस्वर्गावतरणजन्माभिषेकपरिनिष्क्रमण केवलज्ञान निर्वाणकल्याणकविभूति--विभूषित महाभ्युदय श्रीवृषभाजितसंभवाभिनन्दनसुमतिपद्मप्रभसुपार्श्वचन्द्रप्रभपुष्पदंतशीतलश्रेयोवासुपूज्यविमलानन्तधर्मशांति कुन्थ्वरमल्लि-मुनिसुव्रतनमिनेमिपार्श्ववर्द्धमानेतिचतुर्विंशतिवर्तमानपरमदेव भक्तिप्रसादात्सर्वशांतिर्भवतु ।

ओम्भविष्यत्कालाभ्युदयप्रभवमहापद्मसूरदेवसुप्रभस्वयंप्रभसर्वायुधजयदेवोदयदेवप्रभादेवोदंकदेवप्रश्नकीर्तिपूर्णबुद्धनिष्कषायविमलप्रभ वहलनिर्मलचित्रगुप्तसमाधिगुप्तस्वयंभूकंदर्पजयनाथविमलनाथदिव्यवादानन्तवीर्येतिचतुर्विंशतिभविष्यत्परमदेवभक्तिप्रसादात्सर्वशांतिर्भवतु ।

ओम्त्रिकालवर्तिपरमधर्माभ्युदयसीमंधरयुग्मंधरबाहु--सुबाहुसंजातकस्वयप्रभऋषभेश्वरानन्तवीर्यविशालप्रभवज्रधरमहाभद्रजयदेवाजितवीर्येतिपंचविदेहक्षेत्रविरहमाणविंशतिपरमदेवभक्तिप्रसादात्सर्वशांतिर्भवतु ।

ओम् वृषभसेनादिगणधरदेव भक्तिप्रसादात्सर्वशांति र्भवतु ।

ओम् कोष्ठबीजपादानुसारिबुद्धिसंभिन्नश्रोतृप्रज्ञाश्रमणभक्तिप्रसादात्सर्वशांतिर्भवतु ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ओम् जलफलजंघातंतुपुष्पश्रेणिपत्राग्निशिखाकाशचारणभक्तिप्रसादात्सर्वशांतिर्भवतु ।

ओम् अहाररसवदक्षीणमहानसालयभक्तिप्रसादात्सर्वशांतिर्भवतु ।

ओम् उग्रदीप्ततप्तमहाघोरानुमतपोऋद्धिभक्तिप्रसादात्सर्वशांतिर्भवतु ।

ओम् मनोवाक्कायबलिभक्तिप्रसादात्सर्वशांतिर्भवतु ।

ओम् क्रियाविक्रियाधारिभक्तिप्रसादात्सर्वशांतिर्भवतु ।

ओम् मतिश्रुतावधिमनः पर्ययकेवलज्ञानि भक्तिप्रसादात्सर्वशांतिर्भवतु ।

ओम् अंगांगबाह्यज्ञानदिवाकर कुन्दकुन्दाद्यनेकदिगम्बरदेवभक्तिप्रसादात्सर्वशांतिर्भवतु ।

शांतिधारा ।

इह वान्य नगरग्रामदेवतामनुजाः सर्वे गुरुभक्ताः जिनधर्मपरायणा भवन्तु ।

दानतपोवीर्यानुष्ठानं नित्यमेवास्तु ।

मातृपितृभ्रातृपुत्रपौत्रकलत्रसुहृत्स्वजनसम्बंधिबन्धुसहितस्य अमुकस्य ते धन्य धान्यैश्वर्यबलद्युतियशः प्रमोदोत्सवाः प्रवर्द्धन्ताम् ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तुष्टिरस्तु । पुष्टिरस्तु । वृद्धिरस्तु । कल्याणमस्तु । अविघ्नमस्तु । आयुष्यमस्तु । आरोग्यमस्तु । कर्मसिद्धरस्तु इष्टसंपत्तिरस्तु । निर्वाणपर्वोत्सवाः सन्तु । पापानि शाम्यन्तु पुण्यं वर्धताम् । श्रीर्वर्द्धताम् । कुलंगोत्रंचाभिवर्धताम् । स्वस्ति भद्रं चास्तु । भवीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा । श्रीमज्जिनेन्द्र चरणारविंदेष्वानंदभक्तिः सदास्तु ।

पुण्याहवाचन के बाद नीचे लिखा शांतिस्तव या शांतिपाठ (शांति जिनं शशि निर्मलवक्त्रमित्यादि) पढे ।

शांतिस्तव ।

चिद्रूपभावमनवद्यमिमं त्वदीयं ।
ध्यायंति ये सदुपधिव्यतिहारमुक्तं ॥
नित्य निरंजनमनादिमनंतरूपं ।
तेषां महांसि भुवनत्रितये लसंति ॥१॥

ध्येयस्त्वमेव भवपंचतयप्रसार,
निर्णाशकारणविधौ निपुणत्वयोगात् ॥
आत्मप्रकाशकृतलोकतदन्यभाव,
पर्यायविस्फुरणकृतपरमोऽसि योगी ॥२॥

त्वन्नाममंत्रधनशुद्धतजन्मजात ।
दुःकर्मदावमभिशाम्य शुभांकुराणि ॥
व्यापादयत्यतुलभक्तिसमृद्धिभांजि ।
स्वामिन्नतोऽसि शुभदः शुभकृत्त्वमेव ॥३॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

त्वत्पादतामरसकोषनिवासमास्ते ।
चित्तद्विरेफसुकृती मम यावदीश ॥
तावच्च संसृतिजकिल्विषतापशापः ।
स्थानं मयि क्षणमपि प्रतियाति कश्चित् ॥४॥

त्वन्नाममंत्रमनिशं रसनाग्रवर्ति-
यस्यास्ति मोहमदघूर्णन नाशनहेतु ।
प्रत्यूहराजिलगणोद्भवकालकूट-
भीतिर्हि तस्य किमुसंनिधिमेति देव ॥५॥

तस्मात्त्वमेव शरणं तरणं भवाब्धौ,
शांतिप्रदः सकलदोषनिवारणेन ।
जागर्ति शुद्धमनसा स्मरतोयतो मे-
शांतिः स्वयं करतले रभसाभ्युपैति ॥६॥

जगति शांतिविवर्धनमंहसां,
प्रलयमस्तु जिनस्तवनेन मे ।
सुकृतबुद्धिरलं क्षमयायुतो,
जिनवृषो हृदये मम वर्तताम् ॥७॥

इसके बाद निम्नलिखित मन्त्र व पद्य से विसर्जन करे।

ओं ह्रां ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हदादिपरमेष्ठिनः स्व स्थानम् गच्छन्तु गच्छन्तु जः जः जः अपराध क्षमापणं भवतु ।

मोह ध्वांतविदारणं विशद विश्वोद्भासि दीप्ति श्रियम् ।
सन्मार्ग प्रतिभासक विबुधसंदोहामृतापादकम् ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्रीपादं जिनचन्द्रशांति शरणं सद्भक्तिमानेऽपि ते।
भूयस्तापहरस्यं देव भवतो भूयात्पुनर्दर्शनम् ॥

गृहस्थाचार्य निम्नलिखित श्लोक पढ़कर वर वधू को पुष्पवृष्टि द्वारा आशीर्वाद दे।

आरोग्यमस्तु चिरमायुरथो शचीव।
शक्रस्य शीतकिरणस्य च रोहणीव ॥
मेघेश्वरस्य च सुलोचनका यथैषा,
भूयात्तवेप्सित सुखानुभवैाघघात्री ॥१॥

आरती।

वर की सास हाथ में दीपक लेकर वर को तिलक करके आरती करे। इसके पहले खंडेलवालों में पगड़ी भी बंधाई जाती है। पश्चात् वर वधू को मंगलगीत पूर्वक विदा करे।

विवाह के दूसरे दिन वर वधू मंदिर के दर्शन करें। इस समय पंचायत (गोठ) की ओर से जो खोलाणा में ध्वजा आदि के नामपर रकम ली जाती है वह यथाशक्ति ही लेना चाहिए। पश्चात् यदि विनायक यंत्र घर में स्थापित किया हो तो विनय पूर्वक मंदिर में विराजमान कर देना चाहिए।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

परिशिष्ट

शाखाचार ।

पहिले वर पक्ष की तरफ से फिर कन्या पक्ष की तरफ से ।

दोहा ।

वन्दों देव युगादि जिन, गुरु गणेश के पांय ।
सुमरूं देवी शारदा, ऋद्धि सिद्धि वरदाय ॥१॥
अब आदीश्वर कुमर को, सुनियो व्याह विधान ।
विघन विनाशन पाठ हैं, मंगल मूल महान ॥२॥
इस ही भारत क्षेत्र में, आरज खंड मंझार ।
सुख सो बीते तीन युग, शेष समय की वार ॥३॥
चौदह कुलकर अवतरे, अंतिम नाभि नरेश ।
सब भूपन में तिलक सम, कौशलपुर परवेश ॥४॥
मरुदेवी राणी प्रगट, शुभ लक्षण आधार ।
तिनके तीर्थंकर भये, प्रथम ऋषभ अवतार ॥५॥
स्वामि स्वयंभू परम गुरु, स्वयं बुद्ध भगवान ।
इन्द्र चन्द्र पूजत चरण, आदि पुरुष परिमान ॥६॥
तीन लोक तारन तरन, नाम विरद विख्यात ।
गुण अनन्त आधार प्रभु, जगनायक जगतात ॥७॥
जन्मत व्याह उछाह में, शुभ कारज की आदि ।
पहिले पूज्य मनाइये, विनशै विघन विनाश ॥८॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सकल सिद्धि सुख संपदा, सब मनवांछित होय ।
तीनलोक तिहुंकाल में, और न मंगल कोय ॥९॥
इस मंगल को भूलि के, करैं और से प्रीति ।
ते अज्ञान समझें नहीं, उत्तम कुल की रीति ॥१०॥
नाभि नरेश्वर एक दिन, कियो मनोरथ सार ।
आदि पुरुष परणाइये, बोले सुबुद्धि विचार ॥११॥
अहो कुमर तुम जगत गुरु, जगत्पूज्य गुणधाम ।
जन्म योग त्रैलोक सब, कहें हमें गुरु नाम ॥१२॥
तातें नहीं उलंघने मेरे वचन कुमार ।
ब्याह करो आशा भरो, चलै गृहस्थाचार ॥१३॥
सुन के बचन सुतात के, मुसकाये जिन चन्द ।
तव नरेश जानी सही, राजी ऋषभ जिनंद ॥१४॥
बेटी कच्छ सुकच्छ की, नन्द सुनन्दी नाम ।
अगुण रूप गुण आगरी, मांगी बहु गुण धाम ॥१५॥
उभय पक्ष आनन्द भयो, सब जग बढ्यो उछाह ।
लग्न महूरत शुभ घडी, रोप्यो ऋषभ विवाह ॥१६॥
स्नान पान सन्मान विधि, उचित दान प्रकाश ।
संतोषे पोषे स्वजन, योग्य वचन मुख भास ॥१७॥
गज तुरंग बाहन विविध, बनी बरात अनूप ।
रथ में राजत ऋषभ जिन, संग बराती भूप ॥१८॥
नाचें देवी अपसरा, सब रस पोषें सार ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मंगल गावें किन्नरी, देव करें जयकार ॥१६॥
मंगलीक बाजे बजें, वहुविधि श्रवण सुहाहिं ।
नरनारी कौतुक निरख, हरषें अंगन माहिं ॥२०॥
आदि देव दूल्हा जहां, पायन इन्द्र महान ।
तिस बरात महिमा कहन, समरथ कौन सुजान ॥२१॥
आगे आये लेन को, कच्छ सुकच्छ नरेश ।
विविध भेंट देके मिले, उर आनन्द विशेष ॥२२॥
रतन पौल पहुंचे ऋषभ, तोरण घंटा द्वार ।
रतन फूल वरषें घने, चित्र विचित्र अपार ॥२३॥
चौरी मंडप जगमगे, बहुविधि शोभे ऐन ।
चारों दिश चिलकें परे, कंचन कलश अरु बैन ॥२४॥
मोती झालर झूमका, झलके हीरा होर ।
मानो आनन्द मेघ की, झरी लगी चहुंओर ॥२५॥
वर कन्या बैठे जहाँ, देखत उपजे प्रीत ।
पिक बैनी मृग लोचनी, कामिन गावें गीत ॥२६॥
कन्यादान विधान विधि, और उचित आचार ।
यथायोग्य व्यवहार सब, कीनों कुल अनुसार ॥२७॥
इह विधि विवध उछाह सों, भये मंगलाचार ।
कीनी सज्जन [illegible], [illegible] किये [illegible] ॥२८॥
हर्षित नाभि नरेश मन, हर्षित कच्छ सुकच्छ ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मरुदेवी आनन्द थयो, हर्ष परिजन पच्छ ॥२९॥
यह विवाह मंगल महा, पढत बढत आनन्द ।
सबको सुख संपति करो, नाभिराय कुलचन्द ॥३०॥
वंश वेल बाढे सुखद, बढ़ै धर्म मर्याद ।
वर कन्या जीवे सुथिर, ऋषभदेव परसाद ॥३१॥

उक्त शाखाचार कन्या प्रदान की विधि के समय अग्रवाल आदि जातियों में बोला जाता है। इसके साथ अग्रवालों में दोनों पक्ष की ओरसे सात सात पीढी के नाम बताकर वर कन्या की मंगल-कामना की जाती है।

विशेष ज्ञातव्य ।

(१) विवाह के दिन कन्या के रजस्वला होजाने पर कन्या से पांचवें दिन पूजन व हवन आदि विवाह की विधि कराना चाहिए।

(२) नवदेव पूजन में अर्हंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय सर्व साधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य, और जिनालय ये ९ देवता हैं।

(३) गुरु पूजा में ऋद्धियों की स्थापना के लिए "ओं बुद्धि चारण विक्रियौषधतपोबलरसाक्षीणमहानसचतुः षष्ठि ऋद्धिभ्यो नमः" यह मन्त्र कागज पर केसर से लिखकर नीचे की कटनी पर रख देना चाहिए।

(४) विवाह के प्रारंभ में वरमाला के पश्चात् वर और कन्या को परस्पर मुखावलोकन कराना शास्त्रानुसार और

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अनेक प्रकार की आशंकाओं को दूर करने की दृष्टि से अच्छा है।

विवाह के मुहूर्त निकालने आदिमें और अन्य ग्रहादिदोष को दूर करने के लिए जो पीली पूजा आदि शांति के उपाय-अन्य ज्योतिषी बताते हैं उनके उपाय जैनशास्त्रानुसार ही करना चाहिए। नवग्रह विधान के अनुसार विवाह के समय जिनेन्द्र पूजा करा देना चाहिए और विशेष करना हो तो नवग्रह मंडल मंडाकर "ओं ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सर्वविघ्न शांतिं कुरु कुरु स्वाहा" इस मन्त्र की ग्रह के हिसाब से यथाशक्ति जाप्य करा देना चाहिए।

वर की ओर से कन्या के प्रति ७ वचनों में (पृष्ठ ३४ पर) छठे और सातवें वचन के भीतर परपुरुषगमन का त्याग सामिल है। ये प्रतिज्ञायें इसी दृष्टि से कराई गई हैं।

(७) विनायक यन्त्र पूजा (पृष्ठ १६) आदि के प्रारम्भ में यन्त्राभिषेक और आह्वानन आदि विनय और शुद्धि को ख्याल में रखकर ही नहीं लिखे गये हैं। इसीप्रकार विनायक यन्त्र पूजाकी जयमाला (पृ. २१) में चोथा पांचवा पद्य समयानुसार कम कर दिया है।

नव दम्पति के प्रति।

आप दोनों गार्हस्थ्य जीवनमें प्रविष्ट हुए हैं। आपने मानव जीवन को पवित्र और सफल बनाने के लिए ही यह क्षेत्र आपने चुना है। इसको आनन्द पूर्ण और सुखमय बनाना आपके ही ऊपर निर्भर है। यह केवल इंद्रिय भोग भोगने के लिए नहीं, वरन् संयम पूर्वक सदाचार और शील की साधना

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

के उद्देश्य से आपने अंगीकार किया है । आप दोनों एक दूसरे के प्रति तो जवाबदार तोहैं ही,पर स्वधर्म,स्वसमाज की और स्वदेश की सेवा का दायित्व भी आप पर आपड़ा है। यह गृहस्थका भार बहुत बड़ा और अनेक संकटोंसे युक्त है। गृहस्थ अवस्था में आनेवाली अनेक आपत्तियों से घबराकर गृह-विरत होजाने के बहुत उदाहरण मिलेगें। परंतु हमें आशा है आप जीवन की हरेक परीक्षामें उत्तीर्ण होंगे। समस्त कठिनाइयों को कर्मयोगी बनकर सहन करते हुए उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर दृढ रहना आपका कर्त्तव्य होगा।

पुराणों में उल्लिखित जयकुमार-सुलोचना, राम-सीता या अन्य किसी के दाम्पत्य जीवन के आदर्श को आप अपने सामने रखें हमारी यह शुभ कामना है कि उन्हीं के समान भावीपीढी आपका भी उदाहरण अपने समक्ष रखे।

आप दोनों यौवन के वेग में न बहकर अपने कुल के सम्मान का ख्याल रखते हुए गौरवमय यशस्वी जीवन व्यतीत करें। आपका व्यवहार न्याय्य एवं नैतिकतापूर्ण हो।

पति का कर्त्तव्य है कि वह अपनी पत्नी को सहयोगिनी मानकर उसे ऊचा उठाने के साधन सदा जुटाता रहे और पत्नी पति के हर कार्य को सफल बनाने में पूरा योग देती रहे। दोनों भौतिकता में न लुभाकर आध्यात्मिकता के रहस्य को समझें-इसीमें उन्हें यथार्थ सुख और शांति प्राप्त होगी। इसके लिए प्रीतिदिन सामायिक और स्वाध्याय आवश्यक है हमारी हार्दिक मंगल कामना है कि आपकी यह जोडी दीर्घ काल तक बनी रहे।

संपादक

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्री वीर निर्वाणोत्सव

नई बही मुहूर्त विधि।

———⊃ * ⊂———

जिससमय अधर्म बढ़रहा था, धर्मके नामपर असंख्य पशुओं को यज्ञकी बलिविदीपर होमा जाता था, संसारमें अज्ञान छारहा था और जब संसारके लोग आत्मा के उद्धार करनेवाले सत्य मार्ग को भूल रहे थे, ऐसे भयंकर समय में जगत के प्राणियों को सत्यमार्ग दर्शाने, दुःख पीडित विश्व को सहानुभूति का अंतिम दान देने और सार्वभौमिक तथा स्वाभाविक परमधर्म का सत्य सन्देश सुनानेके लिये इस पुनीत भारत वसुन्धरा पर आज से २५४९ वर्ष पहिले कुन्डलपुर में भगवान महावीर ने जन्म धारण किया था तेईसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथजी के २५६ वर्ष ३॥ माह वाद भगवान महावीर का जन्म हुआ था।

अपने दिव्य जीवन में उन्होंने अहिंसा, विश्वमैत्री और आत्मोद्धार का उत्कृष्ट आदर्श उपस्थित किया था और अन्त में अपने चरम लक्ष्य को स्वयं ढूढ निकाला था। भगवान महावीर ने ब्रह्मचर्य के आदर्श को उपस्थित करने के लिये आजन्म ब्रह्मचारी रहते हुए दुर्धर तप धारण कर ४२ वर्ष की उम्र मे ही आत्मा के प्रबल शत्रु चार घातिया कर्मों का नाश कर लोकालोक प्रकाशक केवलज्ञान प्राप्त कर लिया और

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भव्य जीवों को दिव्य ध्वनिद्वारा आत्मा के उद्धार का मार्ग बताया। ७२ वर्ष की उम्र के अन्त में श्री शुभ मिती कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी के अन्त समय (अमावस्या के अत्यन्त प्रातः-काल) स्वाति नक्षत्र में मोक्ष लक्ष्मी को प्राप्त किया।

उसी समय भगवान के प्रथम गणधर श्री गौतमस्वामी को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई और देवों ने रत्नमयी दीपकों द्वारा प्रकाश कर उत्सव मनाया तथा हर्ष के सूचक मोदक (नैवेद्य) आदि से पूजा की तब से इन दोनों महान् आत्माओं की स्मृतिस्वरूप यह निर्वाणोत्सव समस्त भारतवर्ष में मनाया जाता है।

परन्तु वर्तमान में इस उत्सव को भिन्न भिन्न तरीकों से लोग मानते हैं। और उसमें गणेश (जिसका तात्पर्य गणधर गौतम स्वामी से था) की पूजा करते हैं, तथा अन्य देव की कल्पना करते हैं। इसी प्रकार लक्ष्मी (जिसका मतलब मोक्ष लक्ष्मी केवलज्ञान लक्ष्मी से था) को धन संपत्ति की अधि-ष्ठात्री देवी समझकर रुपयोंकी पूजा करते हैं। तथा इसी पवित्र दिन में जूआ आदि अनीतिमूलक कार्य करते हैं। ये सब मिथ्यात्व को पोषण करने वाली अधार्मिक प्रवृत्तियां हैं। इन सब कुरीतियों को दूर कर जैनशास्त्रानुसार सम्य-ग्दर्शन को पुष्ट करने वाली क्रियाओं द्वारा विशेष उत्साह पूर्वक दीपावली मनाना चाहिये, जिससे धार्मिक भाव सदा जागृत रहें। इस उपर्युक्त उद्देश्य को बहुतसे सज्जन जानकर भी लक्ष्मी (रुपयों पैसों) की पूजा करते हैं, यह उनकी नितांत भूल है। हम यह जानते हैं कि वे व्यापारी है और व्यापार विषयक लाभ की आकांक्षा से वे ऐसा करते होंगे। किन्तु

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

उन्हें यह वास्तविक रहस्य मालुम कर लेना चाहिये कि जो धन का लाभ होता है वह अन्तराय कर्म का क्षयोपशम से होता है। अन्तराय कर्म का क्षयोपशम शुभ क्रियाओं से हो सकता है। मिथ्यात्व वर्द्धिनी क्रियाओं से नहीं होता है।

दीपमालिका के रोज प्रातःकाल उठकर सामायिक, स्तुति पाठ कर शौच स्नानादि से निवृत हो श्री जिनमंदिर में पूजन करना चाहिये और निर्वाण पूजा, निर्वाणकांड, महावीराष्टक, बोलकर निर्वाण लाडू चढाना चाहिये।

नई बहियों के मुहूर्त की विधि।

सायंकाल को उत्तम गोधूलिक लग्न में अपनी दुकान के पवित्र स्थान में नई बहियोंका नवीन संवतसे शुभमुहूर्त करें, उसके लिये ऊंची चौकी पर थाली में केशर से 'ओं श्री महावीराय नमः, लिखकर दूसरी चौकी पर शास्त्रजी विराजमान करें और एक थालीमें साथियां माडकर सामग्री चढ़ानेकेलिये रखें। अष्टद्रव्य जल, चन्दन, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, दीप, धूप, फल, अर्घ्य बनावें। बहियां, दवात, कलम आदि पासमें रखलें दाहिनी ओर घी का दीपक, बांई ओर धूपदान रहना चाहिये। दीपक में घृत इस प्रमाण से डाला जाय कि रात्रि भर वह दीपक जलता रहे; इस प्रकार पूजा प्रारम्भ करें। पूजा करने के लिये कुटुम्बियों को पूर्व या उत्तरमें बैठाना चाहिए। पूजा गृहस्थाचार्य से या स्वयं करना चाहिए। सबसे प्रथम पूजन में बैठे हुए सर्व सज्जनों को तिलक लगाना चाहिये, उस समय यह श्लोक पढें।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्लोक ।

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतमो गणी ।
मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो, जैनधर्मोऽस्तु मंगलम् ॥

पश्चात् पूजा प्रारम्भ करें ।

अर्हंतो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः ।
आचार्या जिन शासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः ॥
श्रीसिद्धांतसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधारकाः ।
पंचैतेपरमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु नः मंगलम् ॥ २ ॥

ओं जय जय जय, नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु । णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं णमो णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं । चत्तारि मंगल अरहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं, केवलि पण्णतो-धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा, अरहंतलोगुत्तमा, सिद्ध-लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णातो धम्मोलोगुत्तमा, चत्तारिसरणं पव्वजामि, अरहंतसरणं पव्वजामि, सिद्धसरणं पव्वजामि, साहूसरणं पव्वजामि, केवलिपण्णतो धम्मो-सरणं पव्वजामि । (ओं अनादिमूलमंत्रभ्यो नमः) ।

(यह पढ़कर पुष्पांजलि क्षेपण करें)

श्री देव शास्त्र गुरुपूजा का अर्घ ।

जल परम उज्जल गंध अक्षत पुष्प चरु दीपक धरूं ।
वर धूप निरमल फल विविध बहु जनम के पातक हरूं ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

इहभांति अर्घ चढाय नित भवि करत शिव पंकति मचूं।
अरहंत श्रुत सिद्धांत गुरु निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूं॥

वसुविधि अर्घ संजोयके, अति उछाह मन कीन।
जासों पूजों परम पद, देव शास्त्र गुरु तीन॥

ओं ह्रीं देवशास्त्र गुरुभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामि स्वाहा।

बीस महाराज का अर्घ्य।

जल फल आठों द्रव्य संभार, रत्न जवाहर भर भर थाल।
नमूं कर जोड, नित प्रति ध्याऊं भोरहि भोर॥
पांचों मेरु विदेह सुथान, तीर्थंकर जिन बीस महान।
नमूं कर जोड नित प्रति ध्याऊं भोरहि भोर॥

ओं ह्रीं विदेहक्षेत्रस्य सीमधरादिविद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामि स्वाहा।

तीन लोकवर्ती चैत्यालयों का अर्घ्य।

यावंति जिनचैत्यानि, विद्यन्ते भुवनत्रये।
तावन्ति सततं भक्त्या, त्रिः परीत्य नमाम्यहं॥

ओं ह्रीं त्रिलोक सम्बन्धि जिनेन्द्रबिम्बेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामि स्वाहा

सिद्ध परमेष्ठी का अर्घ्य।

जल फल वसु वृन्दा अरघ अमंदा, जजत अनन्दा के कन्दा।
मेटे भवफन्दा सर्व दुःख दन्दा, हीराचन्दा तुम बन्दा॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

त्रिभुवन के स्वामी त्रिभुवन नामी अन्तरजामी अभिरामी।
शिवपुर विश्रामी निज निधिपामी सिद्धजजामि सिरनामी॥
ओं ह्रीं अनाहत पराक्रमाय सर्व कर्मविनिर्मुक्ताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यम् निर्वपामि स्वाहा।

चौवीस महाराज का अर्घ्य।

जलफल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करों।
तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों॥
चौबीसों श्री जिनचन्द, आनन्द कन्द सही।
पदजजत हरत भव फन्द पावत मोक्षमही॥
ओं ह्रीं श्री वृषभादिवीरांतचतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामि स्वाहा।

श्री महावीर जिनपूजा।

[कविवर वृन्दावन कृत]

छन्द मत्तगयंद।

श्रीमतवीर हरैं भवपीर भरें सुखसीर अनाकुलताई।
केहरि अंक अरीकर दंक नये हरि पंकति मौलिसुहाई॥
मैं तुमको इत थापत हों प्रभु भक्ति समेत हिये हरखाई।
हे करुणा धन धारक देव, इहां अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई॥
ओं ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्राय पुष्पांजलिः।

(छन्द अष्टपदी)

क्षीरोदधि सम शुचि नीर, कंचन भृंग भरों।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

प्रभुवेग हरो भवपीर, यातै धार करों ॥
श्रीवीर महा अतिवीर, सन्मति दायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मति नायक हो ॥१॥
ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर चन्दन सार, केसर रंग भरी।
प्रभु भव आताप निवार, पूजत हिय हुलसा॥
श्री वीर महाअतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मति दायक हो ॥२॥
ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुलसित शशिसम, शुद्ध लीनों थार भरी।
तसु पुंज धरो अविरुद्ध, पावो शिव नगरी ॥श्री.॥
ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरतरु के सुमन समेत, सुमन सुमन प्यारे।
सो मन्मथ भंजन हेत, पूजों पद थारे ॥श्री.॥
ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

रस रज्जत सज्जत सद्य, मज्जत थारभरी।
पद जज्जत रज्जत अद्य, भज्जत भूख अरी ॥श्री.॥
ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा।

तम खंडित मंडित नेह, दीपक जोवत हों।
तुम पदतर हे सुख गेह, भ्रमतम खोवत हों ॥श्री.॥
ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

हरि चन्दन अगर कपूर, चूर सुगंध करा।
तुम पद तर खेवत भूरि, आठों कर्म जरा ॥श्री॥.
ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रितुफल कल वर्जित लाय, कंचन थार भरा।
शिवफलहित हे जिनराज, तुम ढिग भेंट धरा ॥श्री.॥
ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल वसु सजि हिम थार, तनमन मोद धरों।
गुणगाऊं भवदधितार, पूजत पाप हरों ॥ श्री ॥
ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक।

राग टप्पा चाल में।

मोहि राखो हो सरना, श्रीवर्द्धमान जिनरायजी, मोहि-राखो हो सरणा।

गरभ साढसित छट्ठ लियो थिति, त्रिशला उर अघ हरना।
सुर सुरपति तित सेव करयो नित, मैं पूजौं भव तरना॥
मोहि राखो हो सरना, श्रीवर्द्धमान जिनरायजी मोहिराखो.

ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय आषाढ़ शुक्लषष्ठ्यां गर्भ मंगल मण्डिताय अर्घ्यम् निर्वपामि स्वाहा।

जनम चैतसित तेरस के दिन कुंडलपुर कनवरना।
सुरगिर सुरगुरु पूज रचायो, मैं पूजों भव हरना ॥मोहि.॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ओं ह्रीं चैत्र शुक्ल त्रयोदश्यां जन्ममंगल प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामि स्वाहा।

मगसिर असित मनोहर दशमी, ता दिन तप आचरना।
नृप कुमार घर पारन कीनों, मैं पूजौं तुम चरणा ॥मोहि.॥

ओं ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपो मंगल मंडिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामि स्वाहा।

शुक्ल दशैं बैशाख दिवस अरि, घाति चतुक छय करना।
केवल लहि भवि भवसागतारे, जजों चरन सुख भरना ॥मोहि.॥

ओं ह्रीं बैशाख शुक्लदशम्यां ज्ञानकल्याणक प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामि स्वाहा।

कार्तिक श्याम अमावस शिवतिय, पावापुर तें परना।
गनफनिवृन्द जजें तित बहुविधि, मैं पूजौं भवहरना ॥मोहि.॥

ओं ह्रीं कार्तिक कृष्णामावस्यायां मोक्षमंगलमंडिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामि स्वाहा।

जयमाला।

छन्द हरिगीता।

गणधर, असनिधर, चक्रधर, हरधर गदाधर वरवदा।
अरु चापधर विद्यासुधर तिरसूल सेवहिं सदा॥
दुख हरन आनन्द भरन तारन तरन चरन रसाल हैं।
सुकुमाल गुनमनिमाल उन्नत, भाल की जयमाल है ॥१॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

छन्द घत्तानन्द ।

जय त्रिशला नन्दन, हरिकृत वंदन, जगदानंदन, चन्दवरं ।
भव तापनिकंदन तन कन मंदन, रहितसपंदन, नयनधरं ॥

छन्द त्रोटक ।

जय केवल भानुकला सदनं । भविकोक विकाशन कंदवनं ।
जगजीत महारिपु मोहवरं । रजज्ञानदृगांबर चूरकरं ॥ १ ॥
गर्भादिक मंगल मंडित हो । दुख दारिदको नित खंडित हो ॥
जगमांहि तुम्ही सतपंडित हो । तुमही भवभाव विहंडित हो ॥
हरिवंश सरोजनि को रवि हो । बलवंत महंत तुमही कवि हो ॥
लहि केवल धर्म प्रकाशकियो । अबलों सोई मारगराजति हो ॥
पुनि आपतने गुनमांहि सही । सुर मग्न रहैं जितने सबहिं ॥
तिनकी बनिता गुणगावत हैं । लय माननि सो मन भावत हैं ॥
पुनि नाचत रंग उमंग भरी । तुम भक्ति विषै पग एम धरी ॥
झननं झननं झननं झननं । सुर लेत वहां तनन तननं ॥
घननं घननं घन घंट बजै । दमदं दमदं मिरदंग सजै ॥
गगनांगनगर्भगता सुगता, ततता ततता अतता वितता ॥
धृगतां धृगतां गति बाजत है । सुरताल रसाल जु छाजत है ॥
सननं सननं सननं नभमें । इकरूप अनेक जुधारि भमें ॥
कई नारि सु बीन बजावति है । तुमरो जस उज्वल गावति है ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

करताल विषै करताल धरैं। सुरताल विशाल जु नादकरैं।
इन आदि अनेक उछाह भरी। सुरभक्ति करें प्रभुजी तुमरी ॥
तुमही जगजीवन के पितु हो। तुमही बिन कारन ते हितु हो॥
तुमही सब विघ्न विनाशन हो।तुमही निज आनन्द भासन हो॥
तुमही चित चिंतितदायक हो। जगमांहि तुम्हीं सबलायक हो॥
तुम्हरे पन मंगलमांहि सही जिय उत्तम पुन्य लियो सबही ॥
हमको तुमरी सरनागत है, तुमरे गुन में मन पागत है ॥
प्रभु मो हिय आप सदा बसिये। जबलों वसुकर्म नहीं नसिये ॥
तबलों तुम ध्यान हिये वरतों, तबलों श्रुत चिंतन चित्तरतो ॥
तबलों व्रत चारित चाहतु हों, तबलों शुभभाव सुगाहतु हों ॥
तबलों सत संगति नित्य रहो, तबलों मम संजम चित्त गहो ॥
जबलों नहि नाशकरों अरिकों शिव नारिवरों समता धरिको ॥
यह द्यो तबलों हमको जिनजी,हम जाचतु हैं इतनी सुनजी ॥
श्रीवीर जिनेशा नमित सुरेशा, नागनरेशा भगति भरा।
वृन्दावन ध्यावें विघन नशावे, वांछित पावे शर्मवरा॥
ओं ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामि स्वाहा।

श्री सन्मति के जुगलपद, जो पूजैं धरि प्रीत।
वृन्दावन सो चतुर नर, लहै मुक्ति नवनीत॥

इत्याशीर्वादः। (पुष्पांजलिं क्षेपे)

—*—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सरस्वती पूजा ।

दोहा ।

जनम जरा मृतु च्छय करै हरै कुनय जडरीति ।
भवसागरसों ले तिरै, पूजै जिनवच प्रीति ॥१॥

ओं ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वत्यै पुष्पांजलिः ।

छीरोदधिगंगा विमल तरंगा, सलिल अभंगा, सुखसंगा ।
भरि कंचनझारी, धार निकारी, तृषा निवारी, हित चंगा ॥
तीर्थंकर की ध्वनि गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई ।
सो जिनवर वानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवनमानी पूज्य भई ॥

ओं ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

करपूर मंगाया चन्दन आया, केशर लाया रंग भरी ।
शारदपद वन्दों, मन अभिनंदों, पाप निकंदों दाह हरी ॥
तीर्थं. ॥ चंदनम् ॥

सुखदासकमोदं, धारक मोदं अति अनुमोदं चंदसमं ।
बहु भक्ति बढ़ाई, कीरति गाई, होहु सहाइ, मात ममं ॥
तीर्थं. ॥ अक्षतान् ॥ ३॥

बहु फूल सुवासं, विमल प्रकाशं, आनँदरासं लाय धरे ।
मम काम मिटायो, शील बढायो, सुख उपजायो दोष हरे ॥
तीर्थं. ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पक्वान बनाया, बहुघृत लाया, सब विध भाया मिष्टमहा ।
पूजूँ थुति गाऊँ, प्रीति बढाऊँ, क्षुधा नशाऊँ हर्ष लहा ॥
तीर्थं. ॥ नैवेद्यं ॥५॥

कर दीपक-जोतं, तमक्षय होतं, ज्योति उद्योतं तुमहि चढ़ै ।
तुम हो परकाशक, भरमविनाशक हम घट भासक, ज्ञानबढ़ै ॥
तीर्थं. ॥ दीपं ॥ ६ ॥

शुभगंध दशोंकर, पावकमें धर, धूप मनोहर खेवत है ।
सब पाप जलावे, पुण्य कमावे, दास कहावे सेवत है ॥
तीर्थं. ॥ धूपम् ॥७॥

बादाम छुहारी, लोंग सुपारी, श्रीफल भारी ल्यावत है ।
मन वांछित दाता मेट असाता, तुम गुन माता, ध्यावत हो ॥
तीर्थं. ॥फलम् ॥ ८ ॥

नयनन सुखकारी, मृदुगुनधारी, उज्ज्वलभारी, मोलधरै ।
शुभगंधसम्हारा, वसननिहारा, तुम तन धारा ज्ञान करै ॥
तीर्थं. ॥अर्घ्यम्॥ ९ ॥

जलचंदन अक्षत फूल चरू, चत, दीप धूप अति फल लावै ।
पूजा को ठानत जो तुम जानत, सो नर द्यानत सुखपावै ॥
तीर्थं. ॥ अर्घ्यम् ॥ १०॥

जयमाला ।

सोरठा ।

ओंकार ध्वनिसार, द्वादशांगवाणी विमल ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

नमों भक्ति उर धार, ज्ञान करै जडता हरैं ॥

पहलो आचारांग बखानो, पद अष्टादश सहस प्रमानो ।
दूजो सूत्रकृतं अभिलाषं, पद छत्तीस सहस गुरु भाषं ।'
तीजो ठाना अंग सुजानं, सहस बयालिस पदसरधानं ।
चौथो संमवायांग निहारं, चौसठ सहस लाख इकधारम् ॥
पंचम व्याख्याप्रज्ञपति दरसं, दोय लाख अट्ठाइस सहसं ॥
छट्ठो ज्ञातृकथा विस्तारं, पांच लाख छप्पन हज्जारं ।
सप्तम उपासकाध्ययनंगं, सत्तर साहस ग्यारलख भंगं ॥
अष्टम अंतकृतं दस ईसं, सहस अठाइस लाख तेईसं ।
नवम अनुत्तरदश सुविशालं, लाख बानवै सहस चवालं ॥
दशम प्रश्न व्याकरण विचारं, लाख तिरानव सोल हजारं ।
ग्यारम सूत्रविपाक सु भाखं, एक कोड चौरासी लाखं ॥
चार कोडि अरु पंद्रह लाखं, दो हजार सब पद गुरुशाखं ।
द्वादश दृष्टिवाद पनभेदं, इकसौ आठ कोडि पन वेदं ॥
अडसट लाख सहस छप्पन हैं, सहित पंचपद मिथ्या हन हैं ।
इक सौ बारह कोडि बखानो, लाख तिरासी ऊपर जानो ॥
ठावन सहस पंच अधिकाने, द्वादश अंग सर्व पद माने ।
कोडि इकावन आठ हि लाखं, सहस चुरासी छहसौ भाखं ॥
साढे इकीस श्लोक बताये, एक एक पद के ये गाये ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

धत्ता ।

जा बानी के ज्ञान मैं, सूझे लोक अलोक ।
'द्यानत' जग जयवंत हो, सदा देत हु धोक ॥

ओं ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै महार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

सरस्वती स्तवन ।

जगन्माता ख्याता जिनवर मुखांभोज उदिता ।
भवानी कल्याणी मुनि मनुज मानी प्रमुदिता ॥
महादेवी दुर्गा दरनि दुःखदाई दुरगति ।
अनेका एकाकी द्वययुत दशांगी जिनमती ॥१॥
कहैं माता तो को यद्यपि सबहि ऽनादि निधाना ।
कथंचित् तो भी तू उपजि विनशै यों विवरना ॥
धरैं नाना जन्म प्रथम जिनके बाद अबलों ।
भयो त्यों विच्छेद प्रचुर तुव लाखों बरसलों ॥
महावीर स्वामी जब सकल ज्ञानी मुनि भये ।
बिडौजा के लाये समवसृत में गौतम गये ॥
तबै नौका रूपा भवजलधि मांही अवतरी ।
अरूपा निर्वाणी विगत भ्रम सांची सुखकारी ॥
धरै है जे प्राणी नित जननि तो को हृदय में ।
करे हैं पूजा व मन बचन काया करि नमें ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पढ़ावें देवें जो लिखि लिखि तथा ग्रन्थ लिखवा ।
लहें ते निश्चै सो अमर पदवी मोक्ष अथवा ॥

(यह सरस्वती स्तवन पढ़कर पुष्प क्षेपण करें ।)

गौतम स्वामीजी को अर्घ्य ।

गौतमादिक सर्वे एक दश गणधरा ।
वीर जिन के मुनि सहस चौदस वरा ॥
वीर गंधाक्षत पुष्प चरु दीपकं ।
धूप फल अर्घ्य ले हम जजें महर्षिकं ॥

ओं ह्रीं महावीर जिनस्य गौतमाद्येकादशगणधर चतुर्दश सहस्र मुनिवरेभ्योऽर्घ्यम् निर्वपामि स्वाहा ।

इस प्रकार अर्घ्य चढाकर लाभ आदि में विघ्न करनेवाले अन्तराय कर्म को दूर करने के लिये नीचे लिखा हुआ पद्य पढे ।

अन्तरायनाशार्थ अर्घ्य ।

लाभ की अंतराय के वश जीव सु ना लहै ।
जो करे कष्ट उत्पात सगरे कर्मवश विरथा रहे ॥
नहिं जोर वाको चले इक छिन दीनसो जगमें फिरे ।
अरहंत सिद्धसु अधर धरिके लाभ यों कर्म को हरे ॥

ओं ह्रीं लाभांतरायकर्मरहिताभ्यां अर्हत् सिद्धपरमेष्ठिभ्यां अर्घ्यम् निर्वपामि स्वाहा ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अंतराय है कर्म प्रबल जो दान लाभ का घातक है ।
वीर्य भोग उपभोग सभी में, विघ्न अनेक प्रदायक है ॥
इसी कर्म के नाश हेतु श्री, वीर जिनेन्द्र और गणनाथ ।
सदा सहायक हों हम सब के, विनती करें जोडकर हाथ ॥

(यहांपर पुष्पक्षेपणकर हाथ जोड़े)

इसके बाद हरएक बही में केशरसे सांथिया मांडकर एक एक कोरा पान रखे और निम्न प्रकार लिखें ।

लाभ 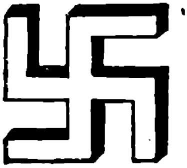 शुभ

श्री ऋषभदेवाय नमः, श्री महावीराय नमः, श्री गौतमगणधराय नमः, श्री केवलज्ञानलक्ष्म्यै नमः, श्री जिनसरस्वत्यै नमः ।

श्री शुभ मिती कार्तिक ....वीर नि. संवत २४ . .
विक्रम सं. २०० . दिनाँक । ।१९.... ई. . . वार को
श्री..की........................
दूकान की.........................बही का शुभ मुहूर्त किया ।

यह हो जाने के बाद विधि करानेवाले, दूकान के मुख्य सज्जन को बही हाथ में देवें और पुष्प क्षेपे ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

इसके बाद घर के प्रमुख महाशय को नीचे लिखा हुआ पद्य व मन्त्र पढ़कर शुभकामना करें और फूलमाला पहिराकर पुष्प क्षेपण करें ।

पद्य ।

आरोग्य बुद्धि धन धान्य समृद्धि पावें ।
भय रोग शोक परिताप सुदूर जावें ॥
सद्धर्म शास्त्र गुरु भक्ति शांति होवे ।
व्यापार लाभ कुल वृद्धि सुकीर्ति होवे ॥१॥
श्री वर्द्धमान भगवान सुबुद्धि देवें ।
सन्मान सत्यगुण संयम शील देवें ॥
नव वर्ष हो यह सदा सुख शांति दाई ।
कल्याण हो शुभ तथा अति लाभ होवे ॥ २ ॥

ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं, ह्रः अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसाधवः शांति पुष्टिं च कुरुत कुरुत स्वाहा । (पश्चात् शांति विसर्जन करें ।)

शांतिपाठ ।

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी, शील गुण व्रत संयमधारी ।
लखन एकसौ आठ विराजे, निरखत नयन कमल दल लाजे ॥
पंचम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी ।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिननायक नमो शांतिहित शांति विधायक ॥
दिव्य विटप पहुपनकी वरषा, दुंदुभि आसन बानी सरसा ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मुनिहारी ॥
शांति जिनेश शांति सुखदाई, जगत पूज्य पूजों सिरनाई ।
परम शांति दीजे हम सबको, पढ़ै जिन्हें पुनि चार संघको ॥
पूजें जिन्हें मुकुटहार किरीट लाके, इंद्रादिदेव अरु पूज्य-
पदाब्ज जाके ।
सो शांतिनाथ वर वंश जगत्प्रदीप, मेरे लिये करहु शांति
सदा अनूप ॥
संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतिनकों को यतिनायकों को।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन शांतिको दे॥
होवे सारी प्रजा को सुख, बल युत हो धर्मधारी नरेशा ।
होवे वरषा समय पे, तिलभर न रहे व्याधियों का अंदेशा ॥
होवे चोरी न जारी, सुसमय वरतै, हो न दुष्काल भारी।
सारे ही देश धारे,जिनवर वृष को जो सदा सौख्यकारी ॥
घाति कर्म जिन नाश करि पायो केवलराज ।
शांति करें ते जगत में, वृषभादिक जिनराज ॥
(तीन बार शांति धारा देवें)

विसर्जन पाठ ।

बिन जाने वा जान के, रही टूट जो कोय ।
तुव प्रसाद तें परम गुरु, सो सब पूरन होय ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पूजन विधि जानूं नहीं, नहिं जानौं आह्वान ।
और विसर्जन हूं नहीं, क्षमा करो भगवान ॥
मंत्र हीन धन हीन हूं, क्रिया हीन जिनदेव ।
क्षमा करहु राखहु मुझे देहुं चरण की सेव ॥
सर्व मंगल मांगल्यम्, सर्व कल्याण कारकम् ।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयतु शासनम् ॥

इसके पश्चात खडे होकर आगे लिखा हुआ महावीराष्टक पढते हुए अर्घावतारण करें ।

महावीराष्टक स्तोत्र ।

(शिखरिणी छन्द)

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः ।
समं भांति ध्रौव्यव्ययजनिलसंतोऽन्त रहिताः ॥
जगत्साक्षी मार्ग प्रकटनपरो भानुरिव यो ।
महावीर स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥१॥
अताम्रं यच्चक्षुः कमल युगलं स्पंदरहितं ।
जनान्कोपापायं प्रकटयति वाभ्यंतरमपि ॥
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वातिविमला ।
महावीर स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥२॥
नमन्नाकेंद्राली मुकुटमणिभाजालजटिलं ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

लसत्पादांभोजद्वयमिह यदीयं तनुभृतां ॥
भवज्वलाशान्त्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि ।
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥३॥
यदर्च्चाभावेन प्रमुदितमना दर्दुर इह ।
क्षणादासीत्स्वर्गी गुणगणसमृद्धः सुखनिधिः ॥
लभते सद्भक्ताः शिवसुखसमाजं किमु तदा ।
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥४॥
कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगततनुर्ज्ञाननिवहो ।
विचित्रात्माप्येको नृपतिवरसिद्धार्थतनयः ॥
अजन्मापि श्रीमान विगतभवरागोद्भुतगति- ।
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ५ ॥
यदीया वाग्गंगा विविधनयकल्लोलविमला ।
बृहज्ज्ञानांभोभिर्जगति जनतां या स्नपयति ॥
इदानीमप्येषा बुधजनमरालैः परिचिता ।
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ६ ॥
अनिर्वारोद्रेकस्त्रिभुवनजयी कामसुभटः ।
कुमारावस्थायामपि निजबलाद्येन विजितः ॥
स्फुरन्नित्यानंदप्रशमपदराज्याय स जिनः ।
महावीरस्वामी नयनपथमामी भवतु मे ॥ ७ ॥
महामोहातंकप्रशमनपराकस्मिकभिषग् ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

निरापेक्षो बंधुर्विदितमहिमा मंगलकरः ॥
शरण्यः साधूनां भवभयभृतामुत्तमगुणो ।
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥८॥

महावीराष्टकं स्तोत्रं भक्त्या भागेन्दुना कृतं ।
यः पठेच्छृणु याच्चापि स याति परमां गतिं ॥९॥

पूजन के बाद याचकों को दान, सज्जनों का सम्मान सेवकों को मिष्टान्न वितरण आदि देशरीति अनुसार करना चाहिये और व्यवहारियों को उत्सव मनाने के समाचार पत्र भेजना चाहिये ।

नोटः—जिन्हें अन्तराय कर्म प्रबल हो वे रात्रि में जिन सहस्र नाम का पाठ अवश्य करें । नूतनवर्ष का प्रभात मंगल दाई हो इसके लिये सर्व सज्जनों को १०८ बार अनादिमूल मन्त्र का शुद्ध भावों से जाप्य करना चाहिये ।

नई बही मुहूर्त की सामग्री ।

अष्ट द्रव्य धुले हुए, धूपदान, दीपक, लालचोल, सरसों
। १ २ १ वार ऽ-
थाली, श्रीफल, लोटा जल का, लच्छा, शास्त्र, धूप, अगरबत्ती
२ १ १ १ ऽ-
पाटे, चौकी, कुंकुम्, केशर घिसी हुई, कोरे पान, दवात,
२ २ ऽ- ।)
कलम, सिंदूर घी में मिलाकर (श्री महावीराय नमः और लाभ शुभ दूकान की दीवाल पर लिखने को) फूलमालायें, नई बहियां आदि ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

निर्वाणकांड भाषा ।

दोहा ।

वीतराग बन्दों सदा, भाव महित शिरनाय ।
कहूं कांड निर्वाण की, भाषा सुगम बनाय ॥

चौपाई १५ मात्रा ।

अष्टापद आदीश्वर स्वामी, वासु पूज्य चंपापुर नामि ।
नेमिनाथ स्वामी गिरनार, बन्दौं भाव भक्ति उरधार ॥
चरम तीर्थंकर चरम शरीर, पावापुरि स्वामी महावीर ।
शिखर समेद जिनेश्वर वीस, भावसहित वन्दौं जगदीश ॥
वरदत रायरु इन्द्र मुनींद्र, सायरदत्त आदि गुणवृन्द ।
नगर तारवर मुनि उठकोडि[1], वंदौ भाव सहित कर जोडि ॥
श्री गिरनार शिखर विख्यात, कोड़ि बहत्तर अरु सौ सात ॥
शंबु प्रधुम्न कुमर द्वै भाय, अनिरुध आदि नमूं तसुपाय ।
रामचंद्र के सुत द्वै वीर, लाडनारिंद आदि गुणधीर ॥
पांच कोडि मुनि मुक्ति मझार, पावागिर वंदो निरधारं ।
पांडव तीन द्रविड राजान, आठकोडि मुनि मुक्ति पयान ।
श्री शत्रुंजय गिरि के सीस, भाव सहित वंदौं जगदीश ॥

१—साढ़े तीन करोड़ ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जे बलभद्र मुकति में गये, आठकोडि मुनि औरहु भये ।
श्री गजपंथ शिखर सुविशाल, तिनकेचरण नमूं तिहुकाल ॥
राम हनु सुग्रीव सुडील, गत्र गवाक्ष नील महानील ।
कोडि निन्याणवै मुक्ति पयान, तुंगीगिरि बंदों धरि ध्यान ॥
नंग अनंग कुमार सुजान, पांच कोडि अरु अर्ध प्रमान ।
मुक्ति गये सोनागिरशीश, ते बन्दौं त्रिभुवनपति ईस ॥
रावण के सुत आदि कुमार, मुक्ति गये रेवातटसार ।
कोडिपंच अरु लाख पचास, ते बंदों धरि परम हुलास ॥

रेवानदी सिद्धवरकूट, पश्चिम दिशा देह जहां छूट ।
द्वै चक्री दश कामकुमार, ऊठकोडि बंदो भवपार ॥
बडवाणी बडनयर सुचंग, दक्षिण दिशगिरि चूल उतंग ।
इंद्रजीत अरु कुम्भ जु कर्ण, ते बंदों भवसायरतर्ण ॥
सुवरण भद्र आदि मुनिचार, पावागिरवर शिखर मझार ॥
चेलना नदी तीरके पास, मुक्ति गये वंदो नित तास ।
फल होडी बडगांव अनूप, पश्चिम दिशा दोणागिरि रूप ॥
गुरुदत्तादि मुनीश्वर जहां, मुक्ति गये वंदैा नित तहां ॥
बालि महावालि मुनि दोय, नागकुमार मिलें त्रय होय ।
श्री अष्टापद मुक्ति मझार, ते वंदैा नित सुरत संभार ॥
अचलापुर की दिशा ईशान, तहां मेढगिरि नाम प्रधान ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

साढेतीन कोडि मुनिराय, तिनके चरन नमूं चित्तलाय ॥
वंशस्थल वनके ढिंग होय, पश्चिम दिशा कुंथुगिरि सोय।
कुलभूषण देशभूषण नाम, तिनके चरणनि करूं प्रणाम ॥
दशरथ राजा के सुत कहें, देश कलिंग पांचसो लहे।
कोटि शिला मुनि कोटि प्रमान, वंदन करूं जोर जुगपान ॥
सम्मवसरण श्री पार्श्व जिनंद, रेसंदीगिरि नयनानंद।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते बन्दौं नित धरम जिहाज ॥
तीन लोक के तीरथ जहां, नित प्रति वंदन कीजे तहां।
मन वच कायसहित सिरनाय वंदन करहिं भविक गुणगाय ॥
संवत सतरहसै इकताल, आश्विन सुदी दशमी सुविशाल।
'भैया' वंदन करहि त्रिकाल, जय निर्वाणकांड गुणमाल ॥

समाधि-मरण भाषा

पं. सूरजचन्दजी विरचित
(छन्द नरेन्द्र)

वंदों श्री अरहंत परम गुरु, जो सबको सुखदाई।
इस जग में दुख जो मैं भुगते, सो तुम जानो राई ॥
अब मैं अरज करूं प्रभु तुमसे, कर समाधि उर मांही।
अन्त समय में यह वर मांगू, सो दीजे जगराई ॥
भव भव में तन धार नये मैं, भव भव शुभ संग पायो।
भव भव में नृप रिद्धि लई मैं, मात पिता सुत थायो ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भव भव मैं तन पुरुषतनो धर, नारी हू तन लीनो।
भव भव में मैं भयो नपुंसक, आतम गुण नहिं चीनो॥
भव भव में सुर पदवी पाई, ताके सुख अति भोगे।
भव भव में गति नरकतनी धर, दुख पाये विधि योगे॥
भव भव मैं तिर्यंच योनि धर, पायो दुख अति भारी।
भव भव में साधर्मी जन को, संग मिलो हितकारी॥
भव भव मैं जिन पूजा कीनी, दान सुपात्रहिं दीनो।
भव भव में मैं समवशरण में, देखो जिन गुण भीनो॥
एती वस्तु मिली भव भव मैं, सम्यक्गुण नहीं पायो।
ना समाधियुत मरण कियो मैं, तातैं जग भरमायो॥
काल अनादि भयो जग भ्रमते, सदा कुमरणहि कीनो।
एक बारमी सम्यक् युत में, निज आतम नहिं चीनो॥
जो निज पद का ज्ञान होय तो, मरण समय दुख कांई।
देह विनासी मैं निज भासी, ज्योति स्वरूप सदाई॥
विषय कषायनि के बश होकर, देह आपनो जानो।
कर मिथ्या सरधान हिये बिच, आतम नाहि पिछानो॥
यों कलेश हिय धार मरण कर, चारों गति भरमायो।
सम्यक्दर्शन, ज्ञान चरित्र मैं, हिरदय मैं नहिं लायो॥
अब या अरज करूं प्रभू सुनिवे, मरण समय यह मांगो।
रोग जनित पीड़ा मत होवो, अरु कषाय मत जागो॥
ये मुझ मरण समय दुख दाता, इन हर साता कीजे।
जो समाधियुत मरण होय मुझ, अरु मिथ्यागद छीजे॥
यह तन सात कुधात मई है, देखत ही घिन आवे।
चर्म लपेटी ऊपर सोहै, भीतर विष्ठा पावे॥
अति दुर्गंध अपावन सों यह, मूरख प्रीति बढ़ावे।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

देह विनासी यह अविनासी, नित्य स्वरूप कहावे ॥
यह तन जीर्णकुटी सम आतम, यातैं प्रीति न कीजे।
नूतन महल मिले जब भाई, तब यामें क्या छीजे ॥
मृत्यु होन से हानि कौन है, याको भय मत लाओ।
समता से जो देह तजोगे, तौ शुभ तन तुम पाओ ॥

मृत्यु मित्र उपकारी तेरा, इस अवसर के मांहीं।
जीरन तन से देत नयो यह, या सम साहू नाहीं।
यासे ही इस मृत्यु समय पर, उत्सव अति ही कीजे ॥

क्लेश भाव को त्याग सयाने, समता भाव धरीजे।
जों तुम पूरव पुण्य किये हैं, तिन को फल सुखदाई ॥
मृत्यु मित्र बिन कौन दिखावै, स्वर्ग सम्पदा भाई।
राग रोष को छोड़ सयाने, सात व्यसन दुख दाई ॥

अन्त समय में समता धारो, पर भव पंथ सहाई।
कर्म महा दुठ वैरी मेरो, तासे तो दुख पावे।
तन पिंजरमें बंद कियो मोहि, यासों कोन छुडावे ॥

भूख तृषा दुख आदि अनेकन, इस ही तन में गाढे।
मृत्युराज अब आप दया कर, तन पिंजरे से काढे ॥

नाना वस्त्राभूषण मैंने, इस तन को पहिराये।
गंध सुगंधित अतर लगाये, षट्रस अशन कराये ॥

रात दिना में दास होयकर, सेव करी तन केरी।
सो तन मेरे काम न आयो, भूल रही निधि मेरी ॥

मृत्युराज को शरण पाय तन, नूतन ऐसो पाऊं।
जामे सम्यक् रत्न तीन, लहि, आठों कर्म खपाऊं ॥

देखो तन सम और कृतघ्नी, नाहिं सु या जग मांही।
मृत्यु समय में ये ही परिजन, सब ही हैं दुखदाई ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

यह सब मोह बढावन हारे, जिय को दुर्गति दाता।
इनसे ममत निवारो जियरा, जो चाहो सुखसाता ॥
मृत्यु कल्पद्रुम पाय सयाने, मांगो इच्छा जेती।
समता धर कर मृत्यु करो तो, पाओ संपति तेती ॥
चौ आराधन सहित प्राण तज, तो ये पदवी पावो।
हरि प्रतिहरि चक्री तीर्थेश्वर, स्वर्ग मुकति में जावो ॥
मृत्यु कल्पद्रुमसम नहिं दाता, तीनों लोक मझारे।
ताको पाय कलेश करो मत, जन्म जवाहर हारे ॥
इस तन में क्या राचे जियरा, दिन दिन जीरन हो है।
तेज कांतिबल नित्य घटत है, था सम अथिर सु को है ॥
पांचों इन्द्रिय शिथिल भई अब, स्वास शुद्ध नहिं आवे।
ता पर भी ममता नहिं छोड़ै, समता उर नहिं लावै ॥
मृत्युराज उपकारी जिय को, तन से तोहि छुड़ावै।
नातर या तन बंदीगृह में, परयो परयो बिललावै ॥
पुद्गल के परमाणु मिलकर, पिंड रूप तन भाषी।
याही मूरत मैं अमूरती, ज्ञान जोति गुण खासी ॥
रोग शोक आदिक जो वेदन, ते सब पुद्गल लारे।
मैं तो चेतन व्याधि विना नित, हैं सो भाव हमारे ॥
या तन से इस क्षेत्र संबन्धी, कारण आन बन्यो है।
खान पान दे याको पोषो, अब समभाव ठन्यो है ॥
मिथ्या दर्शन आत्मज्ञानविनु; यह तन अपनों जानो।
इन्द्री भोग गिने सुख मैंने, आपो नहीं पिछानों ॥
तन विनशन तें नाश जानि निज, यह अज्ञान दुखदाई।
कुटुम्ब आदिको अपनो जानो, भूल अनादि छाई ॥
अब निज भेद यथारथ समझो, मैं हूं ज्योति स्वरूपी।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

उपजै विनसै सो यह पुद्गल, जाना याको रूपी ॥
इष्ट निष्ट जे तो सुख दुख हैं, सो सब पुद्गल सागे ।
मैं जब अपनो रूप विचारों, तब वे सब दुख भागे ॥
बिन समता तन नन्त धरे मैं, तिन में यह दुख पायो ।
शस्त्र घात तैं नन्त बार मर, नाना योनि भ्रमायो ॥
बार अनन्तहि अग्नि मांहि जर, मूवो सुमति न पायो ।
सिंह व्याघ्र अहि नन्तवार मुझ, नाना दुःख दिखायो ॥
बिन समाधि ये दुख लहे मैं, अब उर समता आई ।
मृत्यु राज को भय नहिं मानो, देवे तन सुख दाई ॥
यातैं जब लग मृत्यु न आवै, तब लग जप तप कीजे ।
जप तप बिन इस जग के माहीं, कोई भी ना सीजे ॥
स्वर्ग संपदा तप से पावे, तप से कर्म नसावे ।
तप ही से शिवकामिन पतिह्वै, यासौं पति चित लावै ॥
अब मैं जानी समता बिन मुझ, कोऊ नाहीं सहाई ।
मात पिता सुत बांधव तिरिया, ये सब हैं दुख दाई ॥
मृत्यु समय में मोह करें ये, तातैं आरत होहै ।
आरत तें गति नीची पावै, यों लख मोह तजो है ॥
और परिग्रह जेते जग में, तिन से प्रीति न कीजे ।
पर भव में ये संग न चालें, नाहक आरत कीजे ॥
जो जो वस्तु लसत हैं ते पर, तिन से नेह निवारो ।
पर गति में ये साथ न चालें, ऐसो भाव विचारो ॥
जो पर भव में संग चलें तुझ, तिन से प्रीति सु कीजे ।
पंच पाप तज समता धारों, दान चार विध दीजे ॥
दशलक्षण मय धर्म धरो उर, अनुकंपा चित लावो ।
षोडश कारण नित्य चिन्तवो, द्वादश भावन भावो ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चारों परवी प्रोषध कीजे, अशन रात को त्यागो ।
समता धर दुरभाव निवारो, संयम सों अनुरागो ॥
अन्त समयमें ये शुभ भावहि, होवैं आनि सहाई ।
स्वर्ग मोक्ष फल तोहि दिखावे, रिद्धि देंहि अधिकाई ॥
खोटे भाव सकल जिय त्यागो, उर में समता लाके ।
जा सेती गति चार दूर कर, वसो मोक्षपुर जाके ॥
मन थिरता करके तुम चिंतो, चौ आराधन भाई ।
येही तोको सुख की दाता, और हितू कोऊ सुख नांई ॥
आगे बहु मुनिराज भये हैं, तिन गही थिरता भारी ।
बहु उपसर्ग सहे शुभ भावन, आराधन उर धारी ॥
तिनमें कछु इक नाम कहूँ मैं, सो सुन जिम चित लाके ।
भाव सहित अनुमोदे तासैं, दुर्गति होय न जाके ॥
अरु समता निज उर में आवै, भाव अधीरज जावैं ।
यों निशदिन जो उन मुनिवर को, ध्यान हिये बिच लावैं ॥
धन्य धन्य सुकुमाल महामुनि, कैसे धीरज धारी ।
एक स्यालनी जुग बच्चा जुत, पाव भख्यो दुखकारी ॥
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चितधारी ।
सो तुम्हरे जिय कौन दुख है ? मृत्यु महोत्सव भारी ॥
धन्य धन्य सुकौशल स्वामी, व्याघ्रीने तन खायो ।
तो भी श्रीमुनि नेक डिगे नहिं, आतम सों हित लायो ॥
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चितधारी ।तोतुम्हरे.
देखो गजमुनि के शिर ऊपर, विप्र अगिनि बहु बारी ॥
शीस जलै जिम लकड़ी तिनको, तो भी नाहिं चिगारी ।
यहउपसर्ग सह्यो धरथिरता, आराधन चितधारी ॥तोतुम्हरे.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सनतकुमार मुनीके तनमें, कुष्ट वेदना व्यापी।
छिन्न भिन्न तन तासों हूवो, तब चिंत्यो गुण आपी॥
यह उपसर्ग सह्यो धरथिरता, आराधन चितधारी॥ तो तुम्हरे.

श्रेणिक सुत गंगामें डूब्यो, तव जिन नाम चितार्‍यो॥
धर सलेखना परिग्रह छोड्यो, शुद्ध भाव उर धार्‍यो।
यहउपसर्ग सह्यो धरथिरता,आराधन चितधारी॥ तो तुम्हरे.

समंतभद्रमुनिवर के तनमें, क्षुधावेदना आई।
तौ दुखमें मुनि नैक न डिगियो, चिंत्यो निजगुण भाई॥
यहउपसर्ग सह्यो धरथिरता,आराधन चितधारी॥ तो तुम्हरे.

ललितघटादिक तीस दोय मुनि, कौशांबीतट जानो॥
नद्दी में मुनि बहकर मूवे, सो दुख उन नहिं मानो।
यह उपसर्ग सह्यो धरथिरता,आराधन चितधारी॥ तो तुम्हरे.

धर्मघोष मुनि चंपानगरी, बाह्य ध्यान धर ठाडो।
एक मास की कर मर्यादा, तृषा दुःख सह गाढो॥
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता,आराधन चितधारी॥ तो तुम्हरे.

श्रीदतमुनिको पूर्वजन्म को, वैरी देव सु आके।
विक्रय कर दुख शीततनोसो, सह्यो साधु मन लाके॥
यह उपसर्ग सह्यो धरथिर७ा,आराधन चितधारी॥ तो तुम्हरे.

वृषभसेन मुनि उष्णशिलापर, ध्यान धर्‍यो मनलाई।
सूर्य घाम अरु उष्ण पवनकी, वेदन सहि अधिकाई॥
यह उपसर्ग सह्यो धरथिरता,आराधन चितधारी॥ तो तुम्हरे.

अभयघोष मुनि काकंदीपुर, महावेदना पाई।
वैरी चंडने सब तन छेद्यो, दुख दीनो अधिकाई॥
यह उपसर्ग सह्यो धरथिरता,आराधन चितधारी॥ तो तुम्हरे.

विद्युतचर ने बहु दुख पायो, तौ भी धीर न त्यागी।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

शुभभावनसों प्राण तजे निज, धन्य और बड़भागी।
यह उपसर्ग सह्यो धरथिरता, आराधन चितधारी ॥ तो तुम्हरे.

पुत्र चिलाती नामा मुनिको, वैरीने तन घाता।
मोटे मोटे कीट पड़े तन, तापर निज गुण राता॥
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता, आराधन चितधारी ॥ तो तुम्हरे.

दंडकनामा मुनि की देही, बाणन कर अरि भेदी।
तापर नेक डिगे नहिं वे मुनि, कर्म महारिपु छेदी॥
यह उपसर्ग सह्यो धरथिरता, आराधन चितधारी ॥ तो तुम्हरे.

अभिनंदन मुनि आदि पांचसौ, घानी पेलि जु मारे।
तौ भी श्रीमुनि समता धारी, पूरवकर्म बिचारे।
यह उपसर्ग सह्यो धरथिरता, आराधन चितधारी ॥ तो तुम्हरे.

चाणक मुनि गौघरके माहीं, मूँद अगिन परजाल्यो।
श्रीगुरु उर समभाव धारके, अपनो रूप सम्हाल्यो॥
यह उपसर्ग सह्यो धरथिरता, आराधन चितधारी ॥ तो तुम्हरे.

सातशतक मुनिवर दुख पायो, हथनापुरमें जानो।
बलिब्राह्मणकृत घोर उपद्रव, सो मुनिवर नहिं मानो॥
यह उपसर्ग सह्यो धरथिरता, आराधन चितधारी। तो तुम्हरे.
लोहमयी आभूषण गढ़के, ताते कर पहराये॥
पांचों पांडव मुनिके तनमें, तौ भी नाहिं चिगाये।
यह उपसर्ग सह्यो धरथिरता, आराधन चितधारी ॥ तो तुम्हरे.

और अनेक भये इस जगमें, समता-रसके स्वादी।
वे ही हमको हों सुखदाता, हर हैं टेव प्रमादी॥
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरन तप, ये आराधन चारों।
ये ही मोकों सुख की दाता, इन्हें सदा उर धारो॥
यो समाधि उर माहीं लावो, अपनो हित जो चाहो।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तज ममता अरु आठों मद को, जोतिस्वरूपी ध्यावो ॥

जो कोई नित करत पयानो, ग्रामान्तर के काजै ।
सो भी शकुन विचारै नीके, शुभके कारण साजै ॥

मातपितादिक सर्व कुटुमसब, नीके शकुन बनावै ।
हलदी धनियां पुंगी अक्षत, दूध दही फल लावै ॥

एक ग्राम जाने के कारण, करैं शुभाशुभ सारे ।
जब परगति को करत पयानो, तब नहिं सोचो प्यारे ॥
सर्वकुटुम जब रोवन लागे, तोहिं रुलावे सारे ।
ये अपशकुन करैं सुन तोकों, तू यों क्यों न विचारै ॥

अब परगति को चालत बिरियां, धर्मध्यान उर आनो ।
चारों आराधन मनमें आराधो, मोहतनो दुख हानो ॥
होय निःशल्य तजो सब दुविधा, आतमराम सुध्यावो ।
जब परगतिको करहु पयानो, परम तत्त्व उर लावो ॥

मोह जालको काट पियारे, अपनो रूप विचारो ।
मृत्युमित्र उपकारी तेरो, यों उर निश्चय धारो ॥

दोहा

मृत्युमहोत्सव पाठको, पढो सुनो बुधिवान ।
सरधा धर नित सुख लहो, सूरचंद शिवथान ॥
पंच उभय नव एक नभ, संवत सो सुखदाय ।
आश्विन श्यामा सप्तमी, कह्यो पाठ मन लाय ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बारह भावना ।

(मंगतरामजी कृत)

(छन्द विष्णुपद)

दोहा—बन्दू श्री अर्हंत पद, वीतराग विज्ञान ।
वरणूं बारह भावना, जग जीवन हित जान ॥

कहां गये चक्री जिन जीता, भरतखण्ड सारा ।
कहां गये वह रामरु लछमण, जिन रावन मारा ॥
कहां कृष्ण रुकमिनि सत्यभामा, अरु सम्पत्ति सगरी ।
कहां गये वह रंग महल, अरु सुवरन की नगरी ॥

नहीं रहे वह लोभी कौरव, जूझ मरे रन में ।
गये राज तज पांडव वनको, अग्नि लगी तनमें ॥
मोहनींद से उठ रे चेतन, तुझे जगावन को ।
हो दयाल उपदेश करें गुरु बारह भावन को ॥

अनित्य भावना ।

सूरज चांद छिपै निकलै ऋतु फिर फिर कर आवै ।
प्यारी आयु ऐसी बीते, पता नहीं पावै ॥
पर्वत पतित नदी सरिता जल, बहकर नहिं घटता ।
स्वांस चलत यों घटे काठ ज्यों आरेसों कटता ॥

ओस बून्द ज्यों गले धूप में, वा अंजुलिपानी ।
छिन छिन यौवन छीन होत है, क्या समझे प्रानी ॥
इन्द्र जाल आकाश नगर सम जग सम्पति सारी ।
अथिर रूप संसार विचारो, सब नर अरु नारी ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अशरण भावना ।

काल सिंह ने मृग चेतन को घेरा भव वन में ।
नहीं बचावन हारा कोई, यों समझो मनमें ॥
मन्त्र तन्त्र सेना धन सम्पति, राज पाट छूटे ।
वश नहीं चलता काल लुटेरा, काय नगर लूटे ॥

चक्र रतन हलधर सा भाई काम न आया ।
एक तीर के लागत कृष्ण की, विनश गई काया ॥
देव धर्म गुरु शरण जगत में, और नहीं कोई ।
भ्रम से फिरे भटकता चेतन, यूं ही उमर खोई ॥

संसार भावना ।

जनम मरण अरु जरा रोग से, सदा दुखी रहता ।
द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव भव, परिवर्त्तन सहता ॥
छेदन भेदन नरक पशु गति, बध बन्धन सहना ।
राग उदय से दुख सुरगन में, कहां सुखी रहना ॥

भोग पुण्य फल हो इक इन्द्री, क्या इसमें लाली ।
कुतवाली दिन चार वही फिर, खुरपा अरु जाली ॥
मानुष जन्म अनेक विपत्ति मय, कहीं न सुख देखा ।
पंचम गति सुख मिले, शुभाशुभ का मेटो लेखा ॥

एकत्व भावना ।

जन्मै मरै अकेला चेतन, सुख दुख का भोगी ।
और किसी का क्या इकदिन यह, देह जुदी होगी ॥
कमला चलत न पैंड जाय मरघट तक परिवारा ।
अपने अपने सुख को रोवै, पिता पुत्र दारा ॥

ज्यों मेले में पंथीजन मिलि नेह फिरैं धरते ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ज्यों तरवर पै रैन बसेरा, पंछी आ करते ॥
कोस कोई दो कोस कोई उड फिर थक थक हारे ।
जाय अकेला हंस संग में, कोई न परमारै ।

अन्यत्व भावना ।

मोहरूप मृग तृष्णा जग में मिथ्या जल चमकै ।
चेतन नित भ्रम में उठ उठ, दौडे थक थककै ॥
जल नहिं पावै प्राण गमावै, भटक भटक मरता ।
वस्तु पराई माने अपनी; भेद नहीं करता ॥
तू चेतन अरु देह अचेतन, यह जड़ तू ज्ञानी ।
मिले अनादि यतनतैं, बिछुडे, ज्यों पय अरु पानी ॥
रूप तुम्हारा सबसों न्यारा, भेद ज्ञान करना ।
जौलों पुरुष थकै न तौलौं उद्यमसों टरना ॥

अशुचि भावना ।

तू नित पोखै यह सूखै ज्यों, धोवे त्यों मैली ।
निश दिन करै उपाय देहका, रोग दशा फैली ॥
मात पिता रज वीरज मिलकर, बनी देह तेरी ।
मांस हाड नश लहू राधकी, प्रगट व्याधि घेरी ॥
काना पौंडा पडा हाथ, यह चूसै तौ रोवै ।
फलै अनन्त जु धर्मध्यान की, भूमि विषै बोवैं ।
केशर चन्दन पुष्प सुगंधित, वस्तु देख सारी ॥
देह परसतें होय अपावन, निशदिन मल जारी ।

आश्रव भावना ।

ज्यों सर जल आवत मोरी त्यों, आश्रव कर्मनको ॥
दर्वित जीव प्रदेश गहै जब पुद्गल भरमनको ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भावित आश्रव भाव शुभाशुभ, निशिदिन चेतनको ॥
पाप पुण्य को दोनों करता, कारण वन्धन को ।
पन मिथ्यात योग पंद्रह द्वादश अविरत जानो ।
पंचरु बीस कषाय मिले सब, सत्तावन मानो ॥
मोहभाव की ममता टारै, पर परणत खोते ।
करै मोखका यतन, निराश्रव ज्ञानी जन होते ॥

संवर भावना ।

ज्यों मोरीमें डाट लगावै, तब जल रुक जाता ।
त्यों आश्रव को रोकै, संवर, क्यों नहिं मन लाता ॥
पंच महाव्रत समिति गुप्तिकर, वचन काय मनको ।
दश विधि धर्म परीषह बाइस, बारह भावन को ॥
यह सब भाव सतावन, मिलकर, आश्रव को खोते ।
सुपन दशा से जागो चेतन, कहां पडे सोते ॥
भाव शुभाशुभ रहित शुद्ध भावनसंवर पावै ।
डांट लगत यह नांव पडी मझधार पार जावै ॥

निर्जरा भावना ।

ज्यों सरवर जल रुका सूखता, तपन पड़ै भारी ।
संवर रोकै, कर्म निर्जरा, है सोखनहारी ।
उदय भोग सविपाक समय, पकजाय आम डाली ॥
दूजी है अविपाक पकावैं, पाल विषैं माली ।
पहली सबके होय नहीं, कुछ सरै काम तेरा ॥
दूजी करै सु उद्यम करिके, मिटे जगत फेरा ।
संवर सहित करो तप प्रानी, मिलै मुकति रानी ॥
इस दुलहनकी यही सहेली, जानै सब ज्ञानी ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

लोक भावना ।

लोक अलोक अकाश माँहि थिर, निराधार जानो ॥
पुरुषरूप कर कटी भये, षट् द्रव्यनसों मानो ॥
इसका कोइ न करता हरता, अमिट अनादी है ।
जीवरु पुद्गल नाचै यामै, कर्म उपाधी है ।
पाप पुण्य सों जीव जगत मैं, नित सुख दुःख भरता ॥
अपनी करनी आप भरै, सिर औरन के धरता ।
मोहकर्म को नाश मेटकर, सब जग की आशा ॥
निज पदमैं थिर होय लोकके शीश करो वासा ।

बोधिदुर्लभ भावना ।

दुर्लभ है निगोद से थावर, अरु त्रसगति पानी ।
नरकाया को सुरपति तरसै सो दुर्लभ प्रानी ॥
उत्तम देश सुसंपति दुर्लभ, श्रावक कुल पाना ।
दुर्लभ सम्यक, दुर्लभ संयम, पंचम गुणठाना ॥
दुर्लभ रत्नत्रय आराधन, दीक्षा का धरना ।
दुर्लभ मुनिवर को व्रत पालन, शुद्धभाव करना ॥
दुर्लभ से दुर्लभ है चेतन, बोधि ज्ञान पावै ।
पाकर केवलज्ञान नहीं फिर इस भव में आवै ॥

धर्म भावना ।

षट दरशन अरु बौद्धरु नास्तिक ने जग को लूटा ।
मूसा ईसा और मुहम्मद का मजहब झूठा ॥
हो सुछन्द सब पाप करैं सिर करतार्के लावैं ।
कोई छिनक कोई करता से, जगमैं भटकावैं ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वीतराग सर्वज्ञ दोष बिन श्रीजिन की बानी।
सप्त तत्त्व का वर्णन जामैं, सबको सुखदानी॥
इनका चिंतवन बार बार कर, श्रद्धा उर धरना।
मंगत इसी जतनतैं इकदिन, भवसागर तरना॥

सामायिक की विधि।

अपने प्रतिदिन के जीवन को निरीक्षण करके उसमें सुधार करने, समताभाव प्राप्त करने और आत्मानुभूति के लिए सामायिक करना आवश्यक है। अपने दैनिक कार्यों का अवलोकन कर उनमें जो बुरे है उनको दूर करने का और जो अच्छे हैं उनमें प्रगति करने की प्रेरणा हमें सामायिक से मिलती है। राग, द्वेष मोह, ममता आदि दुर्भाव दूर होकर आत्मा की उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है। मैं कौन हू, कहां से आया हूँ और मेरा क्या उद्देश्य है इस पर विचार करने का मौका सामायिक द्वारा संभव है। अतः प्रति दिन प्रातः और सायं सामायिक अवश्य करना चाहिए।

एकांत स्थान में शुद्ध वस्त्र पहनकर पद्मासन, अर्ध पद्मासन खड्गासन, या सुखासन में से सुविधानुसार किसी एक आसन से पाटे या चटाई पर निराकुल होकर सामायिक करने बैठे। प्रथम ही पूर्व या उत्तर दिशा में मुंहकर दोनों हाथों को लम्बा कर दोनों पैरों के बीच में चार अंगुल का अन्तर रखकर सीधा खड़ा हो फिर नासाग्र दृष्टि हो ६ बार णमोकार मन्त्र पढ़े और अष्टांग नमस्कार कर सामायिक के काल की मर्यादा कर अपने पास के परिग्रह के सिवा शेष का त्याग, आने जाने का और राग द्वेष का त्याग करे। फिर उसी दिन में ६ बार णमोकार मन्त्र पढ़कर ३ आवर्त

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और १ शिरोनति करे। हाथ जोड़कर बांये हाथ की तरफ नीचे घुमाकर दाहिने हाथ की ओर ऊपर लेजाने को आवर्तन और हाथ जोड़कर शिर झुकने को शिरोनति कहते हैं। उक्त क्रिया उस दिशामें स्थित पंचपरमेष्ठी और जिन चैत्य चैत्यालयों को नमस्कार करनेके लिए है अतःआवर्त शिरोनति के साथ पूर्वदिशा सम्बंधी पंच परमेष्ठी और जिनचैत्यालयों को मन,बचन,और कायसे नमस्कारकरता हूँ" यह कहे। फिर दूसरी दिशा दक्षिण (यदि पूर्वसे प्रारम्भ किया हो तो) में और पश्चिम तथा उत्तरमें भी इसीप्रकार करे। फिर पूर्व दिशामें उक्त आसनों में से किसी एकको स्वीकार कर सामायिक शुरू करे।इससमय सामायिकपाठ और आलोचनापाठ पढ़े। फिर सूतकी माला से अथवा बैठा होय तो अपने बांये हाथ के ऊपर सीधे हाथ को रखकर सीधे हाथ में अंगुष्ठ द्वारा सीधे हाथकी अनाभिका अंगुली के बीचके पौर को और उससे ऊपर का पौर गिनकर फिर कनिष्ठा के ३ पौर और फिर अनाभिका का नीचे का पौर, उसके बाद नीचे से मध्यमा के तीनों पैरों पर अंगुष्ठ द्वारा गिनकर ६ बार णमोकार मन्त्र का जाप्य करे। इस प्रकार १२ बार करने से १०८ बार जाप्य होजायगा। माला हो तो ऊपरके ३ दानों पर सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रेभ्यः नमः इसे तीन बार पढ लेवे। पश्चात १२ भावना पढ़े और अपने स्वरूप का एवं कर्तव्य का विचार करे। १०८ बार जाप्य करने का प्रयोजन संरम्भ, समारम्भ; आरम्भ ३ × मन; बचन; काय ३ × कृत; कारित; अनुमोदन ३ × क्रोध; मान माया लोभ ४ = १०८ इन परस्पर गुणित पापों को नष्ट करने से है।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सामायिकपाठ भाषा

पं० महाचन्द्रजी कृत

प्रथम प्रतिक्रमणकर्म।

काल अनंत भ्रम्यो जग में सहिये दुख भारी।
जन्म मरण नित किये पाप को व्है अधिकारी॥
कोडिभवांतर मांहि मिलन दुर्लभ सामायिक।
धन्य आज मैं भयो योग मिलियो सुखदायक॥
हे सर्वज्ञ जिनेश किये जे पाप जु मैं अब।
ते सब मन बच काय योगकी गुप्ति बिना लभ॥
आप समीप हजूरमाहिं मै खडो खडो सब।
दोष कहूं सो सुनो करो नठ दुःख देहिं जब॥
क्रोध मान मद लोभ मोह माया वश प्रानी।
दुःखसहित जे कर्म किये दया तिनकी नहिं आनी॥
बिना प्रयोजन एकइन्द्रि बिगति चउ पंचेन्द्रिय।
आप प्रसादहिं मिटै दोष जो लग्यो मोहि जिय॥
आपसमें इक ठौर थापिकरि जे दुख दीने।
पेलि दिये पगतलें दाबि करि प्राण हरीने॥
आप जगतके जीव जिते तिन सबके नायक।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अरज करूँ मैं सुनो दोष मेटो दुखदायक ॥
अंजन आदिक चोर महा घनघोर पापमय ।
तिनके जे अपराध भये ते क्षमा क्षमा किय ॥
मेरे जे अब दोष भये ते क्षमहु दयानिधि ।
यह पडिकोर्णो कियो आदि षटकर्म माहिं विधि ॥

द्वितीय प्रत्याख्यान कर्म ।

इसके आदि या अन्त में आलोचनापाठ बोलकर फिर तीसरे सामायिक कर्म का पाठ करना चाहिए ।

जो प्रमादवश होय विराधे जीव घनेरे ।
तिनको जो अपराध भयो मेरे अघढेरे ॥
सो सब झूठो होहु जगतपति के परसादै ।
जा प्रसादतैं मिले सर्व सुख दुख न लाधै ॥
मैं पापी निर्लज्ज दयाकरि हीन महाशठ ।
किये पाप अघढेर पापमति होय चित्त दुठ ॥
निंदू हूं मैं बारबार निज जियको गरहूं ।
सब विधि धर्म उपाय पाय फिरि पापहि करहू ॥
दुर्लभ है नर जन्म तथा श्रावक कुल भारी ।
सत्संगति संयोग धर्मजिन श्रद्धाधारी ॥
जिन वचनामृत धार समावर्तें जिनवानी ।
तो हू जीव सँघारे धिक् धिक् धिक् हम जानी ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

इंद्रिय लंपट होय खोय निज ज्ञान जमा सब।
अज्ञानी जिम करैं तिसी विधि हिंसक व्है अब॥
गमनागमन करंतो जीव विराधे भोले।
ते सब दोष किये निंदूं अब मन वच तोलो॥
आलोचन विधि थकी दोष लागै जु घनेरे।
ते सब दोष विनाश होउ तुमतैं जिन मेरे॥
बार बार इस भांति मोह मद दोष कुटिलता।
ईषादिकतें भये निंदिये जे भयभीता॥

तृतीय सामायिक भावकर्म।

सब जीवन में मेरे समताभाव जग्यो है।
सब जिय मो सम समता राखो भाव लग्यो है॥
आर्त रौद्र द्वय ध्यान छांडि करिहूं सामायिक।
संयम मो कब शुद्ध होय यह भाव बधायक॥
पृथ्वी जल अरु अग्नि वायु चउ काय वनस्पति।
पंचहि थावरमाहिं तथा त्रसजीव बसैं जित।
बेइंद्रिय तिय चउ पंचेन्द्रिय मांहि जीव सब॥
तिनसैं क्षमा कराऊं मुझ पर क्षमा करो अब।
इस अवसर में मेरे सब सम कंचन अरु त्रण॥
महल मसान समान शत्रु अरु मित्रहिं समगण।
जामन मरण समान जानि हम समता कीनी॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सामायिक का काल जितै यह भाव नवीनी ॥
मेरो है इक आतम तामें ममत जु कीनो।
और सबै मम भिन्न जानि समता रसमीनों ॥
मात पिता सुत बंधु मित्र तिय आदि सबै यह।
मोतै न्यारे जानि जथारथ रूप कर्यो गह ॥
मैं अनादि जग जाल मांहि फँसि रूप न जाण्यो।
एकेंद्रिय दे आदि जन्तु को प्राण हराण्यो ॥
ते सब जीव समूह सुनो मेरी यह अरजी।
भवभव को अपराध क्षमा कीज्यो करि मरजी ॥

चतुर्थ स्तवनकर्म ।

नमौं रिषभ जिनदेव अजित जिन जीति कर्म को।
संभव भवदुखहरण करण अभिनंद शर्म को ॥
सुमतिसुमतिदातार तार भवसिंधु पार कर।
पद्मप्रभ पद्माभ मानि भवभीति प्रीति धर ॥
श्री सुपार्श्व कृतिपाश नाश भव जास शुद्धकर।
श्री चंद्रप्रभ चंद्रकांतिसम देह कांतिधर ॥
पुष्पदंत दमि दोषकोश भविपोष रोषहर।
शीतल शीतल करण भवताप दोषहर ॥
श्रेयरूप जिनश्रेय ध्येय नित सेय भव्यजन।
वासुपूज्य शत पूज्य वासवादिक भव भयहन ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विमल विमल मतिदेन अंतमत हूँ अनंत जिन ।
धर्म शर्म शिवकरन शांति जिन शांति विधायिन ॥
कुन्थु कुन्थुमुख जीवपाल अरनाथ जालहर ।
मल्लि मल्लसम मोहमल्ल मारन प्रचार धर ॥

मुनिसुव्रत व्रतकरण नमत सुर संघहि नमिजिन ।
नेमिनाथ जिन नेमि धर्मरथ माहिं ज्ञान घन ॥
पार्श्वनाथ जिन पार्श्व उपलसम मोक्ष रमापति ।
वर्द्धमान जिन नमूं वमूं भव दुःख कर्मकृत ॥

या विधि मे जिन संघरूप चउवीस संख्यधर ।
स्तऊ नमूं हूं बार बार वन्दों शिव सुखकर ॥

पंचम वंदना कर्म ।

वन्दूं मैं जिनवीर धीर महावीर सुसन्मति ।
वर्द्धमान अतिवीर वंदिहों मन वच तन कृत ॥
त्रिशला तनुज महेश धीश विद्यापति वंदूं ।
वन्दूं नित प्रति कनकरूप तनु पापनिकन्दूं ॥

सिद्धारथ नृपनन्द द्वन्द दुख दोष मिटावन ।
दुरित दवानल ज्वलित ज्वाल जग जीव उधारन ॥
कुण्डलपुर करि जन्म जगत जिय आनन्द कारन ।
वर्ष बहत्तर आयु पाय सब ही दुख टारन ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सप्त हस्त तनु तुंग भंग कृत जन्म मरण भय ।
बाल ब्रह्ममय ज्ञेय हेय आदेय ज्ञानमय ॥
दे उपदेश उधारि तारि भवसिंधु जीव धन ।
आप बसे शिव मांहि ताहि बंदो मन वच तन ॥
जा के वंदन थकी दोष दुख दूर हि जावे ॥
जाके वंदन थकी मुक्ति तिय सन्मुख आवै ॥
जाके वंदनथकी वंद्य होवैं सुरगन के ।
ऐसे वीर जिनेश बान्दि हूं क्रमयुग तिनके ॥
सामायिक षटकर्म माहिं वंदन यह पंचम ।
वन्दों वीर जिनेन्द्र इन्द्रशत वंद्य वंद्य मम ॥
जन्म मरण भय हरो करो अघ शांति शांतिमय ।
मैं अघकोश सुपोष दोष को दोष विनाशय ॥

छठा कायोत्सर्ग कर्म ।

कायोत्सर्गविधान करूं अंतिम सुखदाई ।
कायत्यजनमय होय काय सबको दुखदाई ॥
पूरब दक्षिण नमूं दिशा पश्चिम उत्तरमैं ।
जिनगृह वंदन करूं हरूं भव पापतिमिर मैं ॥
शिरोनति मैं करूं नमूं मस्तक कर धरिकैं ।
आवर्त्तादिक क्रिया करूं मनवच मद हरिकैं ॥
तीन लोक जिनभवनमाहिं जिन हैं जु अकृत्रिम ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कृत्रिम हैं द्वयअर्द्ध दीप माहीं बन्दो जिम ॥
आठकोडि परि छप्पन लाख जु सहस सत्याणूं ।
चार शतक परि असी एक जिन मन्दिर जाणूं ॥
व्यंतर ज्योतिषमांहिं संख्य रहते जिन मंदिरैं ।
ते सब वंदन करूं हरहु मम पाप संघकर ॥
सामायिक सम नांहिं और कोउ बैर मिटायक ।
सामायिक सम नांहिं और कोउ मैत्री दायक ॥
श्रावक अणुव्रत आदि अंत सप्तम गुण थानक ।
यह आवश्यक किये होय निश्चय दुःख हानक ॥
जे भवि आतम काज करण उद्यम के धारी ।
ते सब काज विहाय करो सामायिक सारी ॥
राग दोष मद मोह क्रोध लोभादिक जे सब ।
बुध 'महाचन्द्र' विलाय जाय तातैं कीजो अब ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आलोचना पाठ

दोहा

बन्दौं पांचों परमगुरु, चौबीसों जिनराज ।
करूं शुद्ध आलोचना, शुद्धि करन के काज ॥

चाल छन्द

सुनिये जिन अरज हमारी, हम दोष किये अतिभारी।
तिनकी अब निवृत्ति काज, तुम शरण लही जिनराज ॥
इक वे ते चउ इन्द्री वा, मन रहित सहित जे जीवा ।
तिनकी नहिं करुणा धारी, निर्दय ह्वै घात विचारी ॥
समरम्भ समारम्भ, आरम्भ, मन वच तन कीने प्रारम्भ ।
कृतकारित मोदन करके, क्रोधादि चतुष्टय धरके ॥
शत आठ जु इन भेदनते, अघ कीने परछेदनते ।
तिनकी कहुँ कोलों कहानी, तुम जानत केवल ज्ञानी ॥
विपरीत एकान्त विनय के, संशय अज्ञान कुनय के ।
वश होय घोर अघ कीने, बचतैं नहीं जात कहीने ॥
कुगुरुन की सेवा कीनी, केवल अदया कर भीनी ।
या विधि मिथ्यात बढ़ायो, चहुँगति मधि दोष उपायो ॥
हिंसा पुनि झूँठ जो चोरी, परबनिता (यामानव) से दृग जोरी ।
आरम्भ परिग्रह भीने, पनपाप जु याविधि कीने ॥
सपरस रसना घ्राणनको, दृगकान विषय सेवन को ।
बहुकर्म किये मनमाने, कुछ न्याय अन्याय न जाने ॥
फल पंच उदम्बर खाये, मधु मांस मधु चित चाहे ।
नहिं अष्टमूल गुण धारे, सेये कुविसन दुःखकारे ॥
बाईस अभक्ष जिन गाये, सोभी निशदिन भुञ्जाये ।
कछु भेदाभेद न पायो, ज्यों त्यों कर उदर भरायो ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अनन्तानुबन्धी सो जानो, प्रत्याख्यान, अप्रत्याख्यानो।
संज्वलन चौकड़ी गुनिये, सब भेद जु षोडश मुनिये॥
परि हास्य अरति रति, शोक भय ग्लानि तिवेद संयोग।
पनवीस जु भेद भये इम, इनके वश पाप किये हम॥
निद्रा वश शयन कराया, स्वप्ने में दोष लगाया।
फिर जागि विषय वन धायो, नाना विधि विषफल खायो॥
आहार बिहार निहारा, इनमें नहिं जतन विचारा।
बिन देखे धरा उठाया, बिन शोधा भोजन खाया॥
तबही परमाद सताये, बहुबिधि विकल्प उपाजाये।
कुछ सुधि बुधि नाहिं रही है, मिथ्या मति छाय गई है॥
मर्यादा तुम ढिग लीनी, ताहू में दोष जु कीनी।
भिन्न-भिन्न अब कैसे कहिये, तुम ज्ञान विषें सब पइये॥
हाहा मैं दुष्ट अपराधी, त्रस जीवनराशि विराधी।
थावर की जतन न कीनी, उर में करुणा नहिं लीनी॥
पृथिवी बहु खोद कराई, महलादिक जाँगा चुनाई।
बिन छाणो पानी ढोल्यो, पंखा तें पवन विलोल्यो॥
हाहा मैं अदयाचारी, बहुहरित जु काय बिदारी।
यामधि जीवन के खंदा, हम खाये धरि आनन्दा॥
हा हा परमाद बसाई, बिन देखे अगिन जलाई।
ता मध्य जीव जो आये, ते हू परलोक सिधाये॥
बीधो अनराति पिसायो, ईंधन बिन शोधि जलायो।
झाड़ू ले जागा बुहारी, चिंटि आदिक जीव बिदारी॥
जल छानि जिवानी कीनी, सो हू पुनि डार जु दीनी।
नहीं जल-थानक पहुँचाई, किरिया बिन पाप उपाई॥
जल मल मोरिन गिरवायो, कृमि कुल बहु घात करायो।
नदियों में चीर धुवायें, कोसों के जीव मराये॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अन्नादिक शोध कराई, ता मध्य जीव निसराई।
तिनको नहिं यत्न करायो, गलियारें धूप डरायो॥
फिर द्रव्य कमावन काजे, बहु आरम्भ हिंसा साजे।
कीये तृष्णा वश भारी, करुणा नहिं रंच विचारी॥
इत्यादिक पाप अनन्ता, हम कीने श्री भगवन्ता।
सन्तति चिरकाल उपाई, वाणी ते कहिय न जाई॥
ताको जु उदय अब आयो, नाना विधि मोहि सतायो।
फल भुंजत जो दुख पाऊँ, बच से कैसे कर गाऊँ॥
तुम जानत केवल ज्ञानी, दुख दूर करो शिव थानी।
हम तो तुम शरण लही है, जिन तारण विरद सही है॥
एक ग्रामपती जो होवे, सो भी दुःखिया दुःख खोवें।
तुम तीन भवन के स्वामी, दुःख मेटो अन्तर्यामी॥
द्रोपदि को चीर बढ़ायो, सीता प्रति कमल रचायो।
अञ्जन से किये अकामी, दुःख मेटो अन्तर्यामी॥
मेरे औगुण न चितारो, प्रभु अपना विरद निहारो।
सब दोष रहित कर स्वामी, दुख मेटो अन्तर्यामी॥
इन्द्रादिक पद नहिं चाहूं, विषयों में नाहिं लुभाऊं।
रागादिक दोष हरी जे, परमातम निज पद दीजे॥

दोहा

दोष रहित जिन देव जी, निजपद दीजे मोहि।
सब जीवन को सुख बढे, आनन्द मंगल होहि॥
अनुभव माणिक पारखी, जौहरी आप जिनन्द।
ये ही वर मोहि दीजिये, चरण शरण आनन्द॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बाबू निरोतीलाल जैन मैनेजर द्वारा श्री स. हु. दि. जैन पारमा.
संस्थाओं के जँवरीबाग प्रेस, इन्दौर में मुद्रित।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

શ્રી યશોવિજયજી જૈન ગ્રંથમાળા • ભાવનગર •

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com